# मैं जीवन दंड विधान हूँ

## (मेरे गीत)

लेखक

सुरेश चौधरी 'इंदु'

शुक्तिका प्रकाशन

**मैं जीवन दंड विधान हूँ**

**(Mai Jeevan Dand Vidhan Hun)**

**ISBN : 978-93-94660-81-6**

**प्रकाशक :**

**शुक्तिका प्रकाशन**

स्वामित्व : ए एंड ए इंटरप्राईजेज

पी 516/4, बी.एल. साहा रोड

कोलकाता-700038

मो. : 8582965531

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

©सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2024

मूल्य : 180/-

संपादन : **मीतू कनोडिया**

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

# स्वकथ्य

जीवन अपने आप में एक अनुशासन और नियमों के आधार के बिना अधूरा होता है। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक समाज तक, मानव जीवन में नियमों तथा अनुशासन का महत्व रहा है। समाज में सुचारु रूप से कार्य करने के लिए, हर व्यक्ति को एक निश्चित अनुशासन का पालन करना होता है। चाहे वह पारिवारिक संबंध हों, सामाजिक दायित्व हों या व्यक्तिगत उन्नति की ओर उठाए गए कदम हों, हर क्षेत्र में कुछ न कुछ नियम होते हैं। इस पुस्तक में समाहित गीत इन्हीं जीवन नियमों को आधार बनाकर लिखे गए हैं।

यह मेरी **34वीं पुस्तक** है और शायद शुद्ध रूप से गीतों की पहली। कुछ गीत सनातन छन्दों पर आधारित हैं तो कुछ गीत नवगीत हैं। आशा है पाठकों को मेरा प्रयास पसंद आएगा।

पुस्तक **''मैं जीवन दंड विधान हूँ''** में प्रस्तुत गीत मात्र मनोरंजन के लिए नहीं हैं, बल्कि वे हमारे जीवन के उन सिद्धांतों को उजागर करते हैं जिन्हें हम अनदेखा करते रहते हैं। जीवन के ये नियम केवल कानूनों तक सीमित नहीं होते, बल्कि यह व्यक्तिगत, आध्यात्मिक, अनुशासनिक तथा नैतिक मूल्यों से भी जुड़े होते हैं। जब व्यक्ति इन मूल्यों की अनदेखी करता है, तो उसे जीवन में किसी न किसी रूप में भोगना पड़ता है। यह दंड भौतिक भी हो सकता है और मानसिक या आध्यात्मिक भी। पुस्तक में विभिन्न आयामों पर लिखे गीत हैं आराध्य की आराधना भी है माँ के प्रति उद्गार भी हैं तो प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण भी, तो देश के प्रति मेरा अनुराग भी। परंतु जीवन के हर मोड़ पर हमें नियमबद्ध होना ही पड़ता है।

इस पुस्तक में निहित गीतों का स्वरूप विविध है। कुछ गीत सीधे जीवन के नैतिक एवं सामाजिक नियमों पर आधारित हैं, जबकि कुछ गीत दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाते हुए जीवन के गहरे अर्थों और अनुशासन पर चर्चा करते हैं।

प्रत्येक गीत अपने आप में एक कहानी कहता है, जिसमें जीवन के किसी विशेष पहलू पर विचार किया गया है। इन गीतों में जो सन्देश छिपा है, वह केवल सतही रूप से समझा जाने वाला नहीं है, बल्कि इसमें गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।

कई गीतों में जीवन के उन क्षणों का वर्णन किया गया है, जहाँ व्यक्ति किसी कठिन परिस्थिति में होता है और उसे समझ में नहीं आता कि वह क्या करे। ऐसे समय में, व्यक्ति अक्सर नियमों का उल्लंघन कर बैठता है, और तब उसे विविध परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। ये गीत पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि वे कैसे अपने जीवन में सही निर्णय ले सकते हैं तथा अवांछित परिस्थितियों से बच सकते हैं।

समाज में नियमों का महत्व सदियों से चला आ रहा है। चाहे वह प्राचीन समाज हो, जहाँ राजा और धार्मिक नेता नियमों को लागू करते थे, या आधुनिक समाज हो जहाँ कानून और न्यायपालिका इस जिम्मेदारी को निभाते हैं, नियम का महत्व कभी भी कम नहीं हुआ है। **"मैं जीवन दंड विधान हूँ"** के गीत समाज में दंड की इस भूमिका को भी दर्शाते हैं। पुस्तक का शीर्षक गीत ही मेरे जीवन की व्यष्टि से समष्टि की यात्रा को दर्शाता है। आध्यात्मिक कलेवर लिए हुए यह गीत मेरा परिचय है। वहीं अन्य गीत में ग्रामीण परिवेश से दूर जाते समाज को आह्वान है कि पुकारता है गांव। कुल 64 गीतों का यह संग्रह भक्ति की साधना भी है आत्म चित्रण भी एवं समसामयिक भी।

यह पुस्तक इस बात पर भी चर्चा करती है कि कैसे समाज में विभिन्न प्रकार के नियम लागू होते हैं। कुछ नियम कानूनी होते हैं, जबकि कुछ नैतिक होते हैं। कभी-कभी समाज किसी व्यक्ति को नैतिक रूप से बहिष्कृत कर देता है, जबकि कुछ मामलों में उसे कानूनी सज़ा दी जाती है। इस पुस्तक के गीत इन विभिन्न प्रकार के दंडों पर भी प्रकाश डालते हैं और यह समझाते हैं कि कैसे व्यक्ति को इनसे बचने के लिए अपने जीवन में अनुशासन और नियमों का पालन करना चाहिए।

पुस्तक के कुछ गीत आत्म-अनुशासन के महत्व पर भी जोर देते हैं। यह सबसे महत्वपूर्ण नियम है, जिसे हर व्यक्ति को अपने जीवन में लागू करना चाहिए। आत्म-अनुशासन का अर्थ है कि व्यक्ति स्वयं अपने कार्यों पर नियंत्रण रखे और अपने जीवन को सही दिशा में चलाए। जब व्यक्ति आत्म-अनुशासन को अपनाता है, तो उसे बाहरी दंड की आवश्यकता नहीं होती। आत्म-अनुशासन से व्यक्ति अपने जीवन को संतुलित और सफल बना सकता है।

इन गीतों में आत्म-अनुशासन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है, जैसे कि समय प्रबंधन, स्व-नियंत्रण एवं जिम्मेदारियों का निर्वहन। यह पुस्तक व्यक्ति को यह सिखाती है कि अगर वह अपने जीवन में आत्म-अनुशासन को अपनाएगा, तो उसे समाज के दंड से डरने की आवश्यकता नहीं होगी।

''**मैं जीवन दंड विधान हूँ**'' एक ऐसी पुस्तक है, जो जीवन के बहु आयामी नियमों की प्रक्रिया को समझने का अवसर प्रदान करती है। इसमें समाहित गीत हमारे जीवन में गहरे अर्थों और सिद्धांतों को उजागर करते हैं। इस पुस्तक के माध्यम से पाठकों को यह संदेश मिलता है कि जीवन के नियमों का पालन करना अनिवार्य है। यह पुस्तक हर व्यक्ति के लिए एक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

आपको पुस्तक कैसी लगी यह अवश्य लिख कर बताइएगा ताकि आपका कथ्य मार्गदर्शिका का कार्य करे।

आपका

**सुरेश चौधरी 'इंदु'**

मो. : 98300-10986

शरद नवरात्र सम्वत 2081

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | मेरा परिचय | 09 |
| 2. | यह मेरा चिंतन | 13 |
| 3. | ऋतुराज वसंत | 15 |
| 4. | क्षितिज यवनिका | 16 |
| 5. | स्वागतम् | 18 |
| 6. | नव मंजरी | 20 |
| 7. | ज्योत | 21 |
| 8. | सूखे पत्ते सा मेरा जीवन | 22 |
| 9. | रुको नहीं झुको नहीं | 24 |
| 10. | पुकारता है गांव | 27 |
| 11. | जब लगे पांव नर्तन करने | 29 |
| 12. | जीवन समर की हार | 30 |
| 13. | मन मुक्त हो जब | 31 |
| 14. | पावस की पहली जलधार | 34 |
| 15. | समीर सरल अभिभूत | 36 |
| 16. | मेरी अभिलाषा | 37 |
| 17. | आ हम बढ़े चलें | 38 |
| 18. | महकता गुलाब | 39 |
| 19. | माँ!!! | 40 |
| 20. | हाथ मेरे साथ बढ़ा सखे | 42 |

21. जिंदगी मेरी पहाड़ी डगरिया 44
22. गीत प्रीत के गाये 45
23. खिले यहाँ पारिजात 47
24. शुभ दीपावली 48
25. आहत चक्षु नीर बहा 49
26. अम्बर-गान 50
27. तू जानती है मुझे 51
28. मैं प्यार निभाता चला 52
29. जीवन समरवृष्टि 53
30. एक प्रेरक गीत 54
31. आशा की एक लौ 55
32. नए वर्ष के स्वागत में 56
33. नारी भारत की 58
34. आंसुओं के समंदर 59
35. पतझड़ सी झड़ती जिंदगी 61
36. वाह्य तिमिर दूर करूँ 62
37. प्रीत की बांसुरी 63
38. चामरी में एक प्रार्थना 66
39. माँ तुम आओ 68
40. तेजस रूप लिए माँ 69
41. लिख लिख पाती श्याम पिया को 71
42. तन बिगाड़ा मन बिगाड़ा 72
43. हे जगस्वामी 73

| | | |
|---|---|---|
| 44. | जीवन के दिन बीत रहे | 75 |
| 45. | देह नष्ट होती है | 77 |
| 46. | कैसे धीरज धरूँ मनवा | 78 |
| 47. | रीत जगत की न्यारी | 79 |
| 48. | प्रभु विरह-गीत | 80 |
| 49. | निशा भी कुमुदिनि खिलाती है | 82 |
| 50. | कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी | 84 |
| 51. | मुरली की तान से झंकृत होना | 85 |
| 52. | धूमिल से अरुणित अम्बर | 86 |
| 53. | मधुर वेणु धुन नर्तन | 87 |
| 54. | चाह कर भी न भूल पाऊँ | 88 |
| 55. | काशीवासी कैलासी की प्रार्थना | 89 |
| 56. | ऐ मेरे प्यारे गणतंत्र | 91 |
| 57. | वीरों की धरा मेरा राजस्थान | 92 |
| 58. | चल रही अनल प्रचंड | 94 |
| 59. | दिग्भ्रमित देश की व्यथा-कथा | 95 |
| 60. | गोधूलि बेला | 97 |
| 61. | लो जीवन का | 99 |
| 62. | जी लिया हूँ खूब जी भर | 100 |
| 63. | दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता | 101 |
| 64. | मातृभूमि | 103 |

❖✵❖

# मेरा परिचय

मैं जीवन दंड-विधान हूँ
मैं निज आत्म सम्मान हूँ
मैं प्राण गति उत्थान हूँ
गौरव प्रतिष्ठा मान हूँ
मैं जगति का प्रतिकार हूँ इस पार हूँ उस पार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

सजा मिले जितनी भी तो
सह लूँगा मैं हंस हंस कर
मैं वेदना के मौन सा
रहा अन्तर्हित हस्ताक्षर
मैं गहरे नीर चीर कर लहरों का उपकार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

मैं स्थावर प्रज्ञा आत्मा
चेतस प्राण का क्षरण हूँ
जीवन संकलन उत्कृष्ट
मैं जीवन संरक्षण हूँ
मैं निष्कृष्ट विचारों का तारण हूँ, लघु निस्तार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

परिचय नहीं कोई यहाँ
मेरी आत्मा का अब तो
मैं परिचय स्वयं देह हूँ
नश्वर उष्मा का अब तो
सर्व विधान का भरण हूँ, देह सृजन एकाकार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

दम घोंट सजा देती है
अंतहीन रात्रि हर परत
अंतर्मन को झकझोरती
उठ चौंकाती खुरच खुरच
कितनी तनी हैं लकीरें, ललाट लिखा उद्गार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

पुष्टि करती हुई बूंदें
गुनाह के सीकर की ये
हथेली पहुँच ललाट पर
पोंछती गुनाह कभी ये
बहती रहे यह अनवरत, गुनाहों का अम्बार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

मैं जीना चाहूँ जीवन
मैं समेट रहा अस्तित्व
मेरा जीवन एक सजा
सदा रहा एक दायित्व
मैं क्यों अग्निपरीक्षा हूँ, मैं रोष का प्रतिकार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

मैं आनंद उमंग आस
सद्बुद्धि का प्रवेश द्वार
मैं खल दंड दंभ अनीति
लोभमत्सर का प्रतिकार
आस्था विश्वास का सागर, अनादित्व का प्रहार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

मैं गीतों का मधुर राग
मैं चमन का पुष्प पराग
मैं धरा का अन्तरदाह
मैं स्वमन की उठती आह
स्नेह मिले तो मैं स्नेहिल, शीतल मलयज बयार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

मैं भारत, भारत मुझमें
वेद उपनिषद ऋत मुझमें
सृष्टि समस्त ज्ञान मुझमें
विश्व गुरु अभिमान मुझमें
बाल्मीकि के छंद मुझमें, गीता का गहन सार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

नियति प्रारब्ध प्रदोष हूँ
आलोकित युग्म कोष हूँ
कर्म संचयित कर्ता हूँ
प्रकृति तोष संहर्ता हूँ
कर्म करूँ निष्काम सदा, धीर कर्मठ तलवार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

पंचभूत नियोग मुझमें
रहते काम भोग मुझमें
कालों का योग मुझमें
गीता कर्मयोग मुझमें
काल दृष्टि को सृष्टि बना, करता प्रयोग हर बार हूँ।
भरी भावनाएं मुझमें, मैं ही पूर्ण संसार हूँ॥

# यह मेरा चिंतन

जहर घुला जीवन
तड़पत है तन मन
भाव हीन क्यूँ है, यह मेरा चिंतन
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।1 ।।

अम्बर मेघ रहित
नीला नील चित्त
उड़ गयी ज्यों प्रीत, बदरिया की जलन
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।2 ।।

बिन छंद के गीत
गयी जैसी बीत
उमरिया हठीली, कैसा ये तर्पण
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।3 ।।

अषाढ़ सावन सा
घुमड़ घुमड़ करता
यह व्याकुल घायल, आहत अंतर्मन
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।4 ।।

रंग है अनूठा
इन्द्रधनुष रूठा
मही जड़वत हुई, क्या यही समर्पण
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।5 ।।

भींगी दुबकी सी
चिड़िया सुबकी सी
उड़ने को आतुर, मैं ढूंढ़ता गगन
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।6 ।।

श्राद्ध कर्म अंतिम
जिजीविषा अंतिम
सांध्य तर्पण करूँ, बीती उमर नमन
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।7 ।।

विकल्प ना कोई
निंद्रा भी खोई
मधुर प्राण गति है, अन्तर्मन चेतन
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।8 ।।

आस निरास न हो
व्यथित प्रयास न हो
लक्ष्य तय करूँ मैं, नित सुगठित नूतन
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।9 ।।

सोचूं खो जाऊँ
सुख से सो जाऊँ
स्वप्न सुनहरे ले, दूर करूँ उलझन
जहर घुला जीवन तड़पत है तन मन ।।10 ।।

# ऋतुराज वसंत

नव् पात-पात सुन्दर पुष्प पलाश अत्यंत
नव गीत गात है अवनी अम्बर दिग-दिगंत
हृदय मध्य हर्ष आनंद अति कोई न अंत
उर उर आ उद्वेलित करे ऋतुराज बसंत।

नव पल्लव नव किसलय नव है उमंग तरंग
आया मोहक बसंत, प्रीत अभिलाष अनंग
रोम रोम हुआ संत भाव-भाव है महंत
उर उर आ उद्वेलित करे ऋतुराज बसंत।

समीर सरल सरोरुह अभिभूत रुत सुहानी
पीली-पीली सरसों वन उपवन अम्लानी
प्राण प्यारा प्रणय अशेष अतिविशेष उदंत
उर उर आ उद्वेलित करे ऋतुराज बसंत।

प्रिय मिलन अतिरेक हुई स्पंदित सारी देह
मन मद गयंद झूम झूम झरे झंकृत नेह
मन चित्त चोर समावेशित प्रेम रस अनन्त
उर उर आ उद्वेलित करे ऋतुराज बसंत।

# क्षितिज यवनिका

क्षितिज यवनिका में सिमटकर, खो गए रंग सारे
अरुणअश्व अस्ताचल, विविध रश्मि मय तारे
मेघ तन मेघ मन तो, सिंचित हुआ जा रहा
दीप वर्तिका सा जल, कंपित हुआ जा रहा।
ज्योति निर्मल जल रही, अहिर्निश मन पुकारे
क्षितिज यवनिका में सिमटकर, खो गए रंग सारे।

निज टोह में ढूंढ़ता, अंतस वृहद सबेरा
दीप प्रभा के पार्श्व में, ज्यूँ कोई अंधेरा
संप्रति दिनकर देखो, कब परिमल बिखेरता
मृणाल से टूट कमल, तुहिन छटा न उकेरता।
ज्योत्सना अभिरूप लिए, प्रभा शीतल सँवारे
क्षितिज यवनिका में सिमटकर, खो गए रंग सारे।

पथिक के विश्राम से, शीश लज्जित हो रहे
चिंतन गंभीर रहे, पार्श्व स्वर लहरी बहे
सत्यान्वेषण सवार, हृदय उद्वेलित गहे
गात गात में लहके, मन चकोर चहक कहे।
श्यामल नभ कोलाहल, दामिनी स्वर हमारे
क्षितिज यवनिका में सिमटकर, खो गए रंग सारे।

हो प्रीत के रीत के, झंकृत नित गीत भी
रूठते मनाते प्रिय, वेणु के संगीत भी
शरद रात्रि की आभा, बरसे पीयूष यहाँ
मोहन सी जोत जला, प्रिये रूठ चला कहाँ।

कली अलि उर खिला कर, अच्युत रीत निभा रे
क्षितिज यवनिका में सिमटकर, खो गए रंग सारे।

# स्वागतम्

स्वागतम् स्वागतम् नव बसंत सु-स्वागतम्
पीत पीत वसुंधरा पोषित नव कुसुम अनुपम।

नव-किसलय नव-पल्लव वासित उपवन नूतन
नव हर्ष आनंदित नव प्रिया उर-तरु मिलन।

पक्षी विचर रहे शुभ व्योम पर हर्षातिरेक
चंहु दिशा नवोत्कर्ष छाया विशेष अभिषेक।

उन्मत पंकज मकरंद रस निपात अति मधुर
अनंग वृन्द चोष चोष पिबम स्वर कामातुर।

नील व्योम स्फटिक रजनीश संग तारांगन
चंहु ओर अति उमंग अनुराग प्रीत प्रांगन।

मिलन मधुर आलिंगन मधुर मधुरा रस पान
प्रेयसी की प्यास मधुर बसंत हुई सुख खान।

खुशी अनन्त है, नयन चपल अयन दिगंत है
हृदय प्रियंत है, आये कन्त हैं, बसंत है।

अमिय रस रसवंति, हरी-भरी धरा बसंती
पुष्प पुष्प रच रहे चित्र विचित्र लाजवंती।

ऋतुराज क्षुब्ध हो करे युवा आह्वाहन
छोड़ बसंती आलिंगन कर देश भावालिंगन।

अंतराल के विकट प्रहरी करे गुंजित देश
क्षितिजपट पर अरुणिमा लिए व्यूष विशेष।

प्रातः की लालिमा ले सुप्त राष्ट्र जगाना है
बसंत तो फिर मने अनाचार मिटाना है।

युगदृष्टा समावेष्ट जग केशरिया वसना
त्याग फाग रंग इस वर्ष हो राष्ट्र चेतना।

# नव मंजरी

नव मंजरी नव पुष्प भ्रमर गुंजित उद्वर्तित
नव शस्य धरा पीत पीत दुकूल विरूक्षीत
नव पल्लव, नव सुगंध धरा पर दृष्टि पर्यंत
उर उर आ उद्वेलित करे ऋतुराज बसंत।

भूमि पीत पीत वसना शस्य सरसों मण्डित
अम्बर अवनी फैले मोहक अगरू सुरभित
अप्रतिम बासंती रचना दृष्टिगत साद्यन्त
उर उर आ उद्वेलित करे ऋतुराज बसंत।

रास बिहारी अमिय रसवंत नेह निमंत्रण
आत्म परमात्म योग का ये एकात्म चित्रण
हरक्षण दिखते मुझे मेरे कृष्ण प्रिय कंत
उर उर आ उद्वेलित करे ऋतुराज बसंत।

तट कालिंदी नृत्य रसराज अनुभूत करूँ
बसंत ऋतु ब्रजरज तज मैं पीड़ प्रभूत करूँ
रसरंजन स्मृति धरे स्मार्त करे राधा-कन्त
उर उर आ उद्वेलित करे ऋतुराज बसंत।

# ज्योत

निसर्ग के प्रांगण में जलाया सत्य का दीया
ज्योतिर्मय अंतस को करता अमृत्य का दीया
अवसादित मन होता है देख असत्य संसार
आह्लादित करने हृदय को है तैयार

लघुत्तर दीप प्रकाश प्रतीक मार्ग प्रशस्त किया
निसर्ग के प्रांगण में जलाया सत्य का दीया

झंझा से डगमगा सकती नहीं यह सबल ज्योत
संकल्प शक्ति सङ्ग भावनाएं हैं ओतप्रोत
देह तो मिथ्या फिर भी अभिमानित क्यूँ है मन
देव श्रुति है असत्य को त्याग, कर सत्य का वरण

चराचर जगत माया अभिसिंचित मानसिक क्रिया
निसर्ग के प्रांगण में जलाया सत्य का दीया

हो मार्ग शूल आच्छादित या हो फिर तिमिर गहन
पग पग अति संकीर्ण है धरा उगले अनल तपन
व्योम के कपाल से निशिकर कर उर्जा को संचित
प्रफुल्लित तन प्रशांत मन हो बाधा न हो किंचित

बाधाओं को करने दूर संकल्प एक लिया
निसर्ग के प्रांगण में जलाया सत्य का दीया

# सूखे पत्ते सा मेरा जीवन

सूखे पत्ते सा मेरा जीवन उड़ उड़ बिखर चला
पतझड़ का मौसम था जानें न किधर किधर चला

प्रभात के प्रथम प्रहर में
बची है कल्मष की छाप
औषधि लेपना भी बना
आहत ह्रदय पर अभिशाप

आशाएं क्षत हुई हत ह्रदय धुआं बन नभ छा गया
प्रेम गीत सुन न सका अवनि तल पर आ टकरा गया
पीड़ित आशाओं को दे वेदना पुनः ठहर चला
सूखे पत्ते सा मेरा जीवन उड़ उड़ बिखर चला

पतंग की डोर थाम कर
न जाने तोड़ चला कौन
बयारों को विपरीत कर
साथी तू क्यों रहा मौन

सरोवर सरोरुह खिला ही था कि अलि मुख मोड़ चला
अहो! दे वेदना जीवन भ्रमर मकरंद निचोड़ चला
वेदना सुखद सपन बनी नैराश्य बन मधुकर चला
सूखे पत्ते सा मेरा जीवन उड़ उड़ बिखर चला

झंझा बन टकराता है
तरंगित कल्लोल निनाद
दुःखों को भर दे कैसे
समय भी करता प्रतिवाद

जीवन एक किनारा है लहरें आती जाती है
इन लहरों सा आता सुख दुख तो जीवन साथी हैं
भूत भविष्य वर्तमान की सोच से उठ ऊपर चला
सूखे पत्ते सा मेरा जीवन उड़ उड़ बिखर चला

# रुको नहीं झुको नहीं

रुको नहीं झुको नहीं समक्ष प्रभाष है
चलना निरंतर पथिक गंतव्य पास है
मात्र चरैवेति चरैवेति मन्त्र आस है
जीवन समर में तम के बाद प्रकाश है।

गतिशील जीवन चक्र प्रभाकर रथ सा
आनंद बोध प्राप्त सप्तवर्णी पथ सा
गति धर्म मेरा गति कर्म में गति वास है
जीवन समर में तम के बाद प्रकाश है।

परिवर्तन निश्चित परिवर्तन अपना लो
शुभ कार्य हेतु नव पथ कदम बढ़ा लो
प्रेरणा प्रकृति प्रेरणा प्रति इतिहास है
जीवन समर में तम के बाद प्रकाश है।

स्मरण उन्हें कर जो समय से आगे बढ़ें
मानव सेवा हेतु ऊंचे मानक गढ़ें
अग्रसर बढ़ने का उत्साह अभिलाष है
जीवन समर में तम के बाद प्रकाश है।

जीत में हार में नित्य जीवन संग्राम में
बिखर न जाना कभी शून्य के विराम में
आशाएं पल्लवित सुगन्धित पलाश है
जीवन समर में तम के बाद प्रकाश है।

न डगमगा चलें प्रचंड मरु रेत बलात
न डर उल्कापात हो या करका निपात
दृढ़ डग रख बढ़ते जा मुक्त आकाश है
जीवन समर में तम के बाद प्रकाश है।

हौसलों से मंजिलें आसान होती हैं
नील स्वच्छ व्योम पर प्रतिमान होती है
भय से पा विजय जीत तुम्हारे पास है
जीवन समर में तम के बाद प्रकाश है।

कार्पण्य जीवन तो अघो जीवन होता
त्याग भय साहस भरो प्रसन्न मन होता
एक जन्म मिला इसमें ही विश्वास है
जीवन समर में तम के बाद प्रकाश है।

इस बसंत अनंग सी उमंग छाई अंग अंग है
मले है अबीर गुलाल मीत का प्रीत रंग है
उद्विग्न गात है हिय मुस्कात है कन्त संग है
बसंती खुमार है नशीली बयार है तरंग है

धरा डोले है रस घोले है पपीहा बोले है
अलिंद मकरंद तौले है अरविन्द मुख खोले है
माद छाये है अभिमाद लाये होले होले है
सुधारस पान है या बसंत रस तन मन घोले है

कैसो आयो बसंत है संत भी हुयो अनंत है
मन प्रीत गीत गात है सुरभित दिग दिगंत है
पुष्पित उपवन है हरित पल्लवित धरा अत्यंत है

# पुकारता है गांव

मैं हूँ तुम हो हम दोनों है
तुम सपनों की बात कहो तो

कब धरा पर नीचे उतर कर
छत पर बूढ़ा चांद हंसेगा
खेतों में किसान भी होंगे
हंसता मेरा गांव बसेगा
नदी हमारी निर्मल होगी
तुम लहरों के साथ बहो तो

ठूंठ हुआ यह सूखा बरगद
फिर उसमे नव कोपल होंगी
तट बैठा देगा सन्त दुआ
अब नहीं रहेगा वो ढोंगी
गीत खुशी के गा कर देखो
तुम औरों का दर्द सहो तो

बचपन बच्चों का लौटेगा
वही खेल पुराने सजेंगे
सांस सांस में खुशबू होगी
रिश्ते सीधे साफ रहेंगे
सब कुछ पहचाना सा होगा
बस एक बार यहाँ रहो तो

हर सबेरा आनंद देगा
शाम सुहानी पावन होगी
नजारा चांद तारों का भी
खुली हवा मन भावन होगी
खुले खुले खेतों में जाकर
माटी से तन कभी गहो तो

हेम कणों से पूरित धरती
गेहूं की बाली में सोना
बात बात में मस्ती लाती
चौपालों का रौनक होना
धरा लाल सूरज उतरेगा
लाली की लहक में लहो तो

पनघट पर मृदु चहल पहल हो
माथ पर फिसलता आँचल हो
ग्राम बाला के शोर मीठे
लचक कमर के दृश्य अनूठे
नीर कलश पर मचल ठहाके
सुर बाला के सुन हरखो तो

# जब लगे पांव नर्तन करने

जब लगे पांव नर्तन करने, मन गाये मल्हार
पीली पीली सरसों फूटे, सुरभित शीत बयार
तन बदन मादक हिलोर उठे, छाए मस्त बहार
फागुन आया समझ झूमके, सुंदर हो संसार

मीठी मीठी बतियाँ बोलें, मीठी मीठी रात
साजन की बहियाँ पुकारती, सर्द पड़े जज्बात
दूर गगन कुहूकता पाखी, ढूंढ़े अपना प्यार
साजन जब घर आये हों तब, सुंदर हो संसार

चकमक चमके चांदनी गगन, तारों की बारात
चन्दा चकोर टुकटुक देखे, विरह अश्रु बरसात
हिय ठंडक आन पड़े प्रियतम, देखूँ बारम्बार
मदमाती खुशबू तेरी पा, सुंदर हो संसार

# जीवन समर की हार

जीवन समर की हार से हार कर न थक तू
प्रयत्न होंगे तेरे सफल बढ़ चल अथक तू
देख विजय परिलक्षित समक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ धरा प्रत्यक्ष।

काट कलुषता मन की जीवन आलोकित कर
डगमगाये ना कदम इस असमतल धरा पर
पायेगा निर्धारित तू लक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ धरा प्रत्यक्ष।

दृग मुक्ता-जल बरसा रहा है क्यों तू व्यर्थ
धीर बन तू, तू रणवीर बन, है तू समर्थ
मार्ग शूल भरा तू बढ़ दक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ धरा प्रत्यक्ष।

निर्जन उपवन सा क्यूँ उदासीन तेरा मन
भर आनंद श्रृंगारित करो जीवन उपवन
पुष्प सा सुरभित अंतस कक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ धरा प्रत्यक्ष।

जय-पराजय तो होगी मन रख न अवसाद
मनोरम सुबह होती काली रात्रि के बाद
करो हारी बाज़ी निज पक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ धरा प्रत्यक्ष।

# मन मुक्त हो जब

मन मुक्त हो जब तनावों से
हर्षित हो उमंग भावों से
जब खुशियां मन को घेरे हो
तन्हाई में भी मेले हो

तन आभा मतवाली होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

जग सारा जब रोग मुक्त हो
छोड़ द्वेष जब प्रेम युक्त हो
जाति मज़हब से दूर जग हो
प्यार की रोशनी जगमग हो

जब सब की इक थाली होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

दीप प्रेम के जब जलते हों
हर सपने सच मे बदलते हों
लिए हृदय मे भाव मिलन के
प्रेम प्रीत उमंग आलिंगन के

मिल दूर तंगहाली होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

मन में हो मधुरता भावों की
जब उपजे फसलें चावों की
जब जब नभ पर तारे चमकें
जब मन में हिलोरें दमके

हर तरफ तब खुशहाली होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

जब कोरोना की खैर न हो
कोई का किसी से बैर न हो
सब मस्त मलंग नाचें गायें
गीत मल्हार के सब सुनाएं

जब खुशियां भरी ताली होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

विचारों में जब ताजगी हो
चिंता मुक्त की बानगी हो
पवन मन गगन मे मुक्त बहे
कपाल सूर्योदय देह गहे

उमंग भरी फुलवारी होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

जब तन मन-जीवन सज जाएं
सद्-भाव के बाजे बज जाएं
महकाए खुशबू खुशियों की
मुस्काएं चंदनिया सुधियों की

तृप्ति की शुद्ध पाली होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

मीठी मीठी बातें करके
मीठी सी मुस्कानें छलके
मधु भरा वातावरण भर के
मुंह मीठा मिठाई धर के

मिठास वह मतवाली होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

हंसी खुशी के ठहाके जम के
रोशनी फुलझड़ी थम थम के
तीखी मीठी नोंक झोंक भी
हंस हंस कर सहे हरदम से

धुन पटाखों की निराली होती है
उस दिन ही दीवाली होती है

# पावस की पहली जलधार

पावस की पहली जलधार अरे
जिया उद्वेलित बार बार करे।

सीकर सी कर तर हुई जो देह
उष्णित हो मुरझा यहाँ रही है।
भिंगोने अंग रिमझिम करती सी
ऋतु पावस की देख आ रही है।

करती शांत भानु प्रचंड ऊष्मा
काली घटाऐं छा छा मन हरे।

तृषित धरा को हरित हरित करती
द्रुमदलों पर नर्तन त्वरित करती।
ले मेघ का गहन घन घन गर्जन
चपल चपल चपला का निष्पादन।

हर्षित गर्वित प्रीतम सजल नयन
ज्यूँ हों काले जलद जल से भरे।

शीतल पावन स्निग्ध वारि फुहार
मुदित झकझोरती तन है अपार।
लग रहा आया मास सावन है
चंचल जलद दृश्य मनभावन है।

इंद्र धनुष की छटा उकेर कहे
नयनाभिराम नभ नयन सुख धरे।

पहुँचा कालिदास के मेघदूत
पी को संदेश मेरा यह प्रभूत।
प्रेयसी विकल तेरी देख मेह
देख प्रथम बूंदों का धरा स्नेह।

गर्जन करते घन देख गिरि शिखर
बह झरने बरस व्यर्थ नीर करे।

ज्यूँ मुरलीधर का पावन वादन
शुष्क नदी का जलकण संचारण।
नूतन जल का होगा अप्लावन
करे सस्मित प्रकृति भी अभिवादन।

इंदु हृदय संग्रह संचय तारण
तरनि दरस को तरसत चित्त भरे।

# समीर सरल अभिभूत

समीर सरल अभिभूत, नव रुत सुहानी चली
हरित पल्लव, किसलय, लिए रातरानी चली
कांत मिलन का अतिरेक, झंकृत आली चली
हृदय चितचोर कर समर्पित मतवाली चली।

पिय आवन की गौरी मन आस बसाय चली
मेहंदी पायल बिछिया बदन सजाय चली
फ़ाग की मदमस्त मदन बयार ऐसी बही
कि पिय हुलक उठी तन बदन आग लगाय चली।

चली तो ऐसी चली अंग अंग लहक उठा
होरी रंग संग अनंग रस मिल दहक उठा
प्यार की फुहार में भींग तन बदन मचला कि
सोंधी सोंधी खुशबू में हर अंग महक उठा।

इस बसंत कैसी अनंग उमंग अंग हुई
प्रीत गुलाल चूमे कपोल मद तरंग हुई
बसंती खुमार में नशीली बयार चल रही
सपन रंजन भींग सपन ही कान्त संग हुई।

# मेरी अभिलाषा

हर क्षण होते नहीं विशेष, कुछ क्षण ही बनते इतिहास।

हृदय नहीं लाती हर बात, उबलते जज्बात का त्रास
हर गीत गीता सा न खास, जिसकी शिक्षा का मन वास
बहुत कम गांधी से महान, होता सच का जहाँ निवास
हर दिवस प्रकृति दे मुस्कान, क्यों लाते नहीं हम उजास
हर क्षण होते नहीं विशेष, कुछ क्षण ही बनते इतिहास।

नहीं कर पाता हर मनुष्य, स्थापित वे ऊंचे आदर्श
मरता तो हर कोई देख, शहीद सा करे न मन स्पर्श
मरते गुमनामी की मौत, उनका मरना व्यर्थ विमर्श
कुछ मौतें ही होती खास, अमर हो फैलाती प्रकाश
हर क्षण होते नहीं विशेष, कुछ क्षण ही बनते इतिहास।

नहीं मनमोहन सी हर राग, मोहक बंसुरिया की तान
करे झंकृत हिय कुछ ही शब्द, निकलाते मनोहर गान
अभिलाषा मेरी मुझे भी, इंदु ऐसा बना भगवान
याद करे समस्त संसार, मिले हर जन जन का विश्वास
हर क्षण होते नहीं विशेष, कुछ क्षण ही बनते इतिहास।

# आ हम बढ़े चलें

आ हम बढ़े चलें, आकाश को चूम लें,
जमीन पर झूम लें, कदम नाप घूम लें।

नभ को मुट्ठी में करने की ले आशा
बढ़ चलें हम नौनिहाल कदम-कदम मिला
जलाकर दिया उम्मीदों का एक यहाँ
सुनहरे भविष्य के फूल इस राह खिला।

रुके झुके नहीं मंजिल नामालूम लें,
आ हम बढ़े चलें, आकाश को चूम लें।

किये जाएँ काम अपना बिना लोभ के
देश आगे बढ़े अपना यही सोच के
अपनों के लिए तो कभी जिए नहीं हम
दूसरों के लिए जान लुटाएं यहीं हम।

पक्षी बन मुक्त अम्बर में उड़ घूम लें,
आ हम बढ़े चलें, आकाश को चूम लें।

# महकता गुलाब

न किसी चमन का मैं महकता गुलाब हूँ
न किसी फिजा का मैं थिरकता शबाब हूँ
सुखी पतझड़ की पत्तियों का नसीब हूँ
हवा में डोलती पतंग के करीब हूँ

अब तितलियां हैं सिर्फ मेरे करीब में
बची मधुकर की गुंज मेरे नसीब में
वे भी ले समस्त मकरंद अब उड़ गयी
लुटी तकदीर मेरी किस राह मुड़ गयी

हालात ने ऐसा हाल किया क्या कहूँ
उठा गर्दिश में क्यों डाल दिया क्या कहूँ
सोच सोच कर बैचैन था क्या कहूँ
न रहा आज किसी के काम का क्या कहूँ

घर रोशन कर सकूँ वो शमादान नहीं
सजा सकूँ आँगन को वो सामान नहीं
गले लगाये ऐसा मेहर बान नहीं
उम्र है तजुर्बा है पर कद्रदान नहीं

# माँ!!!

मानस की चौपाई हैं या, अतीत लिखी कथाएं हैं
तुलसी आंगन बिरवा हैं माँ, या वेद की ऋचाएं हैं।

श्वास मलय सौरभ शीतल है, मंद मंद समीर झोंका
सप्तरंगी वर्तिका अंतस, खिंच इंद्रधनुष झरोखा
भाग्य हाथ लिख संजोती तू, स्वर्णिम भविष्य हो मेरा
यों लगे कांति भुवन भानु की, उदित हुआ नया सबेरा।

देवलोक दीप्त सलिल प्रवाह, गुंजित दसों दिशाएं हैं
तुलसी आंगन बिरवा हैं माँ, या वेद की ऋचाएं हैं।

माँ तेरा रूप अविनि अम्बर, ज्योर्तिपुंज सा दमक रहा
वात्सल्य तेरा पारिजात, क्षितिज मिलन पर चमक रहा
माँ त्रिपिटिक के सिद्ध सूक्त सी, है तू गीता की वाणी
सप्तसिंधु नीर भरी कलसी, धो पद पूजूँ कल्याणी।

केसर चंदन रोली वंदन, मंगल प्रीत हवाएं हैं
तुलसी आंगन बिरवा हैं माँ, या वेद की ऋचाएं हैं।

तू कविता की सहज वेदना, काव्य में ढली काया सी
स्पर्श गंध पुष्प का अनुबंध, अद्भुत ममता माया सी
प्रवाह प्रीत स्नेह सागर का, गंगा की निर्मल धारा
ममता की मानसरोवर माँ, या शिल्पी सर्जन कारा।

वेदों की मूल चेतना है, अर्जित उष्ण शिराएं हैं
तुलसी आंगन बिरवा हैं माँ, या वेद की ऋचाएं हैं।

बोल मधुर गूंजती शिंजनी, नर्तन मन परिमेय गहे
कहाती कल्पना ईश्वर की, हर्षित सिंचित हृदय रहे
सर्वस्नात मूरत मन बसती, धन्य पुण्य जीवन मेरा
गूंज मंदिर की घंटियों में, आरती है मनन तेरा।

यमुना की श्याम लहर पावन, चंचल चंद्र कलाएं हैं
तुलसी आंगन बिरवा हैं माँ, या वेद की ऋचाएं हैं।

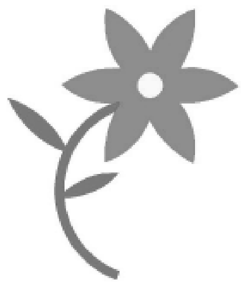

# हाथ मेरे साथ बढ़ा सखे

ऐसा हाथ मेरे साथ बढ़ा सखे
सुरभित हर कदम संग संग हो चले

न मन की सुगंध यहाँ कम हो, न मन की सुगंध वहाँ कम हो
नया नया साथ है गात है, इस मन गीत के सुर न कम हो

कुछ ऐसा साथ तुम निभा प्राण सखे
संग संग जीवन भर हम साथ चलें

कुछ बोझ तुम्हारा भी कम हो, कुछ बोझ हमारा भी कम हो
नया नया माँगा बोझ यहाँ, ढोता रहूँ कभी न यह कम हो

कुछ ऐसा अभास कराओ तुम सखे
बिखरी जिंदगी आ सिमट सिमट चले

कुछ गम तुम्हारा यहाँ कम हों, कुछ गम हमारा वहाँ कम हों
नया प्यार सिमट सिमट आया, देखो यह बिखर कर न कम हो

कुछ ऐसा इतिहास तुम लाओ सखे
गहन सागर भी सिहर सिहर हो चले

कुछ सपन, तुम्हारे भी कम हो, कुछ सपन, हमारे भी कम हों
नए नए सपने वे अपने, उड़ान तेरी कभी न कम हो

कुछ ऐसा इंतज़ार कराओ सखे
समय का यह चक्कर थम थम हो चले

कुछ कसक, तुम्हारी भी कम हो, कुछ कसक, हमारी भी कम हो
आकाश नया नया हमारा, छाई बदरी काली कम हो

कुछ ऐसा दीपक तुम जलाओ सखे
जिंदगी बस रोशन रोशन हो चले

कुछ तमस तुम्हारा भी कम हो, कुछ तमस हमारा भी कम हो
उत्साह नया नया न कम हो, क्षितिज अवनी चुम्बन न कम हो

# जिंदगी मेरी पहाड़ी डगरिया

लहराती सी ऊर्ध्वमुख हुई बादलों में खोती चली
सीप बन समंदर के गहरे तल जीवन डुबोती चली
बुझाने नयनों की प्यास अनजान राह बताती चली
जिंदगी मेरी पहाड़ी डगरिया सी लहराती चली

स्वतः उद्घोषित था मार्ग सर्पीली गुमनाम राह थी
अंध गहरी डगर थी काल की कल्मषता की चाह थी
कलुषता को करती आत्मसात नव गीत सुझाती चली
जिंदगी मेरी पहाड़ी डगरिया सी लहराती चली

लाता हर निशि के बाद प्रभात उन्मुक्त हृदय सींचता
नजदीकियाँ प्रतीत हो रही मानो दूरियां खींचता
साकार का निराकार में शाश्वत मिलन कराती चली
जिंदगी मेरी पहाड़ी डगरिया सी लहराती चली

यह अंतिम डगर है अंतिम स्वास है अन्तिम है प्रयास
जीवन ज्योति जलाने को एक प्रकाश पुंज की तलाश
इक टिमटिमाती रोशनी 'इंदु' को राह दिखाती चली
जिंदगी मेरी पहाड़ी डगरिया सी लहराती चली

# गीत प्रीत के गाये

श्रम थक रुका लौट गोधुलि घर आये
सुमधुर ध्वनि घण्टी गौ कंठ बजाए
निशा दिशा सांझ धूसर गगन छाए
अवनी अम्बर गीत प्रीत के गाये

सांध्य परे कृषक थका
थक थक स्वेद भी रुका
थकी धरा श्वेत हुई
चाहत हिमप्रेत हुई
शस्य श्यामला वसुंधरा मुस्काये
अवनी अम्बर गीत प्रीत के गाये

अहर्निश सुधा बरसे
देव रमण को तरसे
अनहद खुशियां चहके
हरित धरा शुभ महके
भंडार अन्न धन के भर भर जाएं
अवनी अम्बर गीत प्रीत के गाये

ये नदियां मदमाती
कलकल गीत सुनाती
प्रकृति यहां इठलाती
ऋतुएं वेणु बजाती
रंग बसंती फाग झूम इतराये
अवनी अम्बर गीत प्रीत के गाये

पोषक कृषक हमारे
चिर धरा अमृत वारें
क्षीर सुधा बरसाये
भारत मन हरषाएँ
ठंड पाला या भूमि आग लगाये
अवनी अम्बर गीत प्रीत के गाये

धैर्य की मूरत कृषक
श्रम शांत सूरत कृषक
क्षमता अनमोल कृषक
हैं सच्चे बोल कृषक
अन्नदाता तेरा मंगल मनाएं
अवनी अम्बर गीत प्रीत के गाये

विधि विधा क्यों है धुंआ
पालक ही घालक हुआ
क्योंकर धन दंश छुआ
रिक्त कृषक वंश हुआ
पुनः सोने का भारत हम बनाएं
अवनी अम्बर गीत प्रीत के गाये

# खिले यहाँ पारिजात

जीवन पथ अति कठिन शूल ही शूल बिखरे हुए
ज्यूँ विचलित मन को गर्म हवा के थपेड़े छुए
ज्यूँ अति भयंकर नाद करता सरिता जल प्रपात
ज्यूँ श्याम मेघमय गगन पर हो चंचला निपात
जीवन उपवन सुरम्य अति खिले यहाँ पारिजात

दृढ़ प्रतिज्ञ साधक कर धीर मनः शक्ति साधना
निश्चित कर लक्ष्य प्राप्ति को सयंमित कर कामना
परिवर्तित कर शूल को फूल में, ला नव प्रभात
जगत विदित आती अरुणिमा गहन रात्रि पश्चात्
जीवन उपवन सुरम्य अति खिले यहाँ पारिजात

सुख दुख, आस निराश के मार्ग पर चलते हम
हारते नहीं विकट परिस्थितियों से लड़ते हम
काल प्रहर सा जीवन सुबह दोपहर और रात
सुधा सिन्धु पा, काट अँध उर के, सह उल्कापात
जीवन उपवन सुरम्य अति खिले यहाँ पारिजात

चंचल मन तीव्र धार, उठती गिरती बार बार
संशय जलधि पार कर, ले आत्मबल की पतवार
जीवन भंवर न कर सकती पार कागज की पात
आनन्द अनन्त भावना लिए हर, डर अज्ञात
जीवन उपवन सुरम्य अति खिले यहाँ पारिजात

# शुभ दीपावली

आशाओं के दीप जला
मैं निर्जन विपिन से चला
चीर तिमिर मेघों का, गर्जन कर निकल चला
यह दीप न बुझे कभी, जला ज्योत प्रबल जला
प्रत्यूष कांति की मृदु गति
प्रभास जीवन संगति मति
मैं हर्ष गीत गा कर, सुख सागर में मचला
यह दीप न बुझे कभी, जला ज्योत प्रबल जला
बुझे न ज्योर्ति वर्तिका लौ
कल्पना की मचलती रौ
स्वप्न रहे तपा तपा, जल जल कर तमस जला
यह दीप न बुझे कभी, जला ज्योत प्रबल जला
बस नवल कांति मिले मुझे
नव उमंग शांति मिले मुझे
शांत चित्त था मेरा, एक दीया तभी जला
यह दीप न बुझे कभी, जला ज्योत प्रबल जला
ये ज्योति पुंज अमिय कुंज
मंदिर भावनाओं की गूंज
काट कर उर के अंध, चल पड़ लगा अर्गला
यह दीप न बुझे कभी, जला ज्योत प्रबल जला
नव ज्योत्सना नवल सम्बल
नभ के नव दीप जल प्रबल
आत्मसात कर विकार, ज्ञान ज्योत प्रखर जला
यह दीप न बुझे कभी, जला ज्योत प्रबल जला

# आहत चक्षु नीर बहा

आहत चक्षु नीर बहा बहा, शुष्क बिखर इतराते हैं
सूखे पत्ते बन जब सपने, नैनों से झड़ जाते हैं
यादों के जख्म जब पीड़ बन, मन विदीर्ण कर जाते हैं
विरही चातक स्वाति-बूँद को, तब तरस-तरस जाते हैं

भानु की उष्णता करने कम, वारिद नभ पर आते हैं
निष्ठुर घन जब धरा मिलन से, भी आगे बढ़ जाते है
शरद गगन पर तारागण जब, नील भास चमकाते हैं
विरही चातक स्वाति-बूँद को, तब तरस-तरस जाते हैं

चक्षु भी शुष्क हो जब दर्शन, से अतृप्त रह जाते हैं
निहारे चकोर पूर्ण शशि को, प्रेम की गति बताते हैं
रूठे प्रियतम की यादों में, शुक्तिका जल बहाते हैं
विरही चातक स्वाति-बूँद को, तब तरस-तरस जाते हैं

मिलन इंदु बनता शिखर बिंदु, गीत विरह के गाते हैं
गुंजित भ्रमर कमल पँखुड़ी पर, रस पान को शर्माते हैं
जब सरोज की बाँह में भृंग, जकड़ पकड़ तड़पाते हैं
विरही चातक स्वाति-बूँद को, तब तरस-तरस जाते हैं

अब तो मिल मेरे शुष्क अधर, प्रियतम गीत गवाते हैं
प्रेम दर्शन का ब्रज गोपाल, तब वेणु पर बजाते है
नाथ निकल इन पाषाणों से, इंदु भाव हृदय आते हैं
विरही चातक स्वाति-बूँद को, तब तरस-तरस जाते हैं

# अम्बर-गान

शशि प्रभा से खिल रहा स्वप्नों का गगन, हर्षित मनोल्लास,
दे आमंत्रण मधुर मिलन का, सदा क्षितिज करता है उपहास,
चेतना ढूंढ रही, स्वप्न हो रहे सत्य, समर्पित यह मधुर मास,
ऐ मेरी जीवन वाटिका, ऐ मेरे गगन के तारे, कहाँ है तेरा वास।

वेदना के स्वर से रचित, आनंद लय से भरपूर भावाच्छ्वास,
शशि किरणे देख रही सागर, पूर्णिमा हंस रही, मेरा पुनर्वास,
तिमिराच्छादित गगन, दीप शिखाएं, रोमांचित जल-प्रकाश,
आकर्षक मृदुता का वितान, प्रकृति का अनुपम चिर आभास।

प्रात: की अरुणिमा, क्षितिज की छाई लालिमा, आनंद प्रवास,
प्रफुल्लित तन का उत्कर्ष, रोमांचित मन की मचलती श्वास,
वर्षों की प्रीत अभिव्यक्ति, स्वप्न सिंधु जागृत गीत अनुप्रास,
वारिद का सन्देश, प्रेषित अनुराग, झंकृत अंतस के उल्लास।

अनन्यता का उत्कर्ष, मिलन का हर्ष, जागृत मधु अभिलाष,
अम्बुधिजल पर मनोहर, मोहक चंचल किरणों का भूविलास,
शीतल अनिल, सौम्य-शांत नैसर्गिक छटाएं, हृदय का प्रभास,
शशि प्रभा से खिल रहा स्वप्नों का गगन, हर्षित मनोल्लास।

# तू जानती है मुझे

चाहा है तुझे उतना ही जितना की तू चाहती है मुझे
माना है तुझे उतना ही जितना की तू मानती है मुझे
तेरा चाहना तेरा मानना एक रस्म निभाई तो नहीं
मैं जानता हूँ रची मेरे अन्दर तू जानती है मुझे॥

वादा वफ़ा बातें, बातें है, बातों से क्या लेना देना
प्यार आँखों में झलके तो चाहतों से क्या लेना देना
प्यार से बड़ी वफ़ा होती न कोई, वादा निभाते ही हैं
यकीन करना सीखो यार जज्बातों से क्या लेना देना॥

मेरे गीत सतरंगी, तेरे साज में ढलें उस से पहले
मेरे सपन सुनहरे, तेरे नैनो में बसें उस से पहले
तुम कौन हो, मेरी हो, मेरी ही रहोगी, यह वादा करो
मैं कहीं टूट न जाऊँ तेरा वादा टूटे उस से पहले॥

आओगी, साज सुनाओगी, गीत गाओगी, तो कैसा हो,
सपने बसाये जज्बातों से खेल रचाओगी तो कैसा हो
यकीनन तुम बेवफा तो नहीं पर वफ़ा का भी यकीन कहाँ
मिल साथ एक नया आशियाना बनाओगी तो कैसा हो॥

जरूरतों से ऊपर इंसानियत कोई चीज है तो होने दे
बेवफाई आँखों से पानी चुरा लेती है तो लेने दे
'इंदु' बूंद बूंद भरता समुन्दर जज्बातों में बहकना नहीं
दुनिया ठोकर मारने को बैठी उतारू, तो मार देने दे॥

# मैं प्यार निभाता चला

मैं दीवाना मैं प्यार निभाता चला
बादलों को दिए से गलाता चला॥

शाखों पर कलियाँ जब खिल खिल आई
जीवन बगियाँ में जब तू लहराई
तब फिर गीत खुशी के मैं गाता चला
मैं दीवाना मैं प्यार निभाता चला॥

दर्द बढ़ा तब आहों में मुस्काया
खिंच नदिया दरिया तक पहुंचाया
दर्द ग़ालिब बन ग़ज़ल बनाता चला
मैं दीवाना मैं प्यार निभाता चला॥

ये प्रीत ये अनुभूति मेरा धर्म है
शाश्वत है पूजा है हृदय मर्म है
कर अर्चन जीवन अमृत बनाता चला
मैं दीवाना मैं प्यार निभाता चला॥

साँसों साँसों ले उष्णता प्रीत की
भावों भावों ले चुभन जग रीत की
बैठ किनारे तुझे अपनाता चला
मैं दीवाना मैं प्यार निभाता चला॥

मैं दीवाना मैं प्यार निभाता चला
बादलों को दिए से गलाता चला॥

# जीवन समरवृष्टि

जीवन समरवृष्टि का घन-नाद तो होता है दुःराग्रही
उल्कापात हो करका निपात हो, होता है पूर्वाग्रही
संसाधन तो सिमित हों और मन विचलित होता बार बार
अत्यधिक सम्प्रेषण की स्थिति में यह होता है अनुग्रही

विषम परिस्थितियां हैं तो समझौता करना ही पड़ता है
कभी कभी शूल भरे मार्ग पर भी चलना ही पड़ता है
श्रेष्ठ नर वही होता जो जीवन समर में लेता दृढ़ निश्चय
लक्ष्य कर निर्धारित चले तो यह मार्ग सरल ही लगता है

अति उत्साही मनुज अतिक्रमण करता है निज संधानों का
परन्तु जिसने सीख लिया हो जलाना दीप मुस्कानों का
मानो उसने सीख लिया गाना जीवन गीत दीवानों का
असंतुष्टि हर लेती सुख अतिशय लालायित परवानों का

अधिक कामना और अभिलाषा करती उत्पन्न असंतोष
दुर्बल आत्म-बल जिनका करते हैं सर्वाधिक मन का दोष
निज बल को सुदृढ़ बनाना है तो पाना होगा संतोष धन
अन्यथा शक्तिक्षीण हो जाएगी, ज्यों हो जल से अगन

# एक प्रेरक गीत

निश्चित अन्धकार अनंत हो,
समस्याएं अधिक ज्वलंत हो,
दिशा-हीन भटक रहा तू क्यूँ इस मार्ग में,
खोज राह, यह विशेष निज मन की आग में।

विष वमन, सुधा सिन्धु पान कर,
काट अंध-उर के, विहान कर,
शक्ति ला, पार कर जोर के इस बहाव को,
सक्षम है तू, हरने में मन के तनाव को।

चंचल-मन की तेज़ धार हो,
गिरती-उठती बार-बार हो,
कागज़ की पतवार लगा नहीं सकती पार
बीच भंवर से निकलना है तुझे लगातार।

प्रफुल्लित-पुनीत भावना हो,
आनंदित अनन्त साधना हो,
झेल सकता ऐ साहसी तू ये आंधिया
अपने दुर्भाग्य पर बरस, बन अब बिजलियाँ।

# आशा की एक लौ

आशा की एक लौ जली है मन में, तू हो एक नूतन आस्था जीवन में

ये चमक ये दमक ये जीवन की महक
ऐ माँ तेरे से ही है मुख पर चहक
प्रथम गुरु बन ज्ञान दिया बचपन में, तू प्रेरक सुरभित पुष्प उपवन में
आशा की एक लौ जली है मन में, तू हो एक नूतन आस्था जीवन में

तू पूजा तू ही मंदिर तू ही देव
तू ही देवालय तू है ज्ञान सदैव
मैं साधक तू साध्य इस अंतर्मन में, तू तरल में विद्यमान मैं सघन में
आशा की एक लौ जली है मन में, तू हो एक नूतन आस्था जीवन में

तेरे आँचल की छांव में समस्त सुख
तेरी मुस्कान हर लेती सारे दुख
अवसादित तिमिर के इस समापन में, तू है माँ मेरे हृदय के स्पंदन में
आशा की एक लौ जली है मन में, तू हो एक नूतन आस्था जीवन में

अवनी से अम्बर तक प्रकाशमान तू
मात जननी गौरवमयी अभिमान तू
पूर्ण चन्द्र आभा तेरे आनन् में, ज्यूँ शीतल पवन बहे द्रुम कानन में
आशा की एक लौ जली है मन में, तू हो एक नूतन आस्था जीवन में

# नए वर्ष के स्वागत में

वर्ष का अवसान हुआ चाहता है
अब नूतन विहान हुआ चाहता है
समाप्त कर हम अनंत अभिलाषाएँ
समाप्त कर अपनी अपूर्ण कामनाएं

आओ मंगल गायें हम
जीवन कलश सजाएं हम।

आदित्य के अनिकेत का गौरव है
पुष्पित कुञ्जलता मंडित सौरभ है
तुषार पल्लव पल्लव आच्छादित है
प्रेम पीयूष सरित मन आलोड़ित है

अंतर्मन से भगाएं तम
प्रीत नयन हो जाएं नम।

हे पालक विश्वरूप सृष्टि रचियता
समष्टि के निर्माता धृति संचयिता
काल के पोषक रूपक अधिष्ठाता
नमन तुझे वंदन तुझे है विधाता

नूतन सृष्टि रचाएं हम
नूतन सोच बनाएं हम।

जागे भूल कल्मष बीते वर्ष का
आशाओं से सिंचित उत्कर्ष का
भावनाओं से स्नेहिल क्षण हर्ष का
बीता चला क्षण जीवन संघर्ष का

हेम भविष्य सजाएं हम
आओ मंगल गायें हम।

# नारी भारत की

नारी भारत की जयति, जयति भिन्न आयाम
तुम दृढ़ शक्ति स्वरूप हो, तुम ही तो सुखधाम।।

रूप मंजरी आनंद दायनी
शांत शीत समीर सुख प्रदायनी
पावन मानस की चौपाई सी
पाक हो खुसरो की रुबाई सी

रवींद्र संगीत की तान मखमली
बाउल गीत मत्स्य चाल रुपहली
वन में उन्मुक्त मृग सी मचलती
स्वप्न स्वर्णिम ले गगन विचरती

अर्चन सिक्त से नयन रतनारे
दृढ़ता शीलता धैर्य तू धारे
मीन शालीन सम चक्षु तुम्हारे
सब ही आँखी नाम से पुकारे

# आंसुओं के समंदर

आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।
कितनी आह सही कितने गम, बन्द ही रहे अंतस द्वार।

जीवन मेरा बदरंग हुआ, आया कुछ ऐसा तूफान
इधर उधर तिनके सा उड़ता, टूटता बिखरता अभिमान
ठोकरें लगती रहीं फिर भी, छुपाये रहा मन उद्गार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

आशाएं क्षत हुई कब कहाँ, किसको दूँ मैं इसका दोष
क्या मुझसे ही हुई भूल यह, मैंने ही किया आत्मतोष
वादियां पतझड़ से घिर गई, सर्द हवाएं चली हर बार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

संवेदना का प्रेषण किधर, और किधर सुप्त लुप्त मौन
हर सिम्त रुसवाईयाँ रही, दिल बार बार पूछे कौन
उत्तर मेरे पास भी न था, उत्तर ढूंढू बारम्बार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

गीत मेरा संगीत मेरा, कविता संग सुरीली तान
मधुर मदिर काव्य छंद सा था, मेरा सुंदर जीवन गान
छेड़ा टूटी लय आ कोई, और गडमड हुई झंकार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

तूफान काल बैशाखी का, डगमग डगमग करती नांव
जैसे गंगा की लहरों में, माझी ढूंढ़े अपनी ठाँव
जीवन नैया कौन संभाले, कौन चलाये यह पतवार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

# पतझड़ सी झड़ती जिंदगी

पतझड़ सी झड़ती जिंदगी को देने सहारा,
सूखते तालाब को फिर से भरने दुबारा,
अरमानों को ढांढ़स के कांधों पे सुलायेगा।
अब कौन आकर कांटों से निज़ात दिलायेगा

घिस-घिस गयी जिंदगी पगडण्डी की राहों सी,
उतर-उतर अंदर खोजती उजाला भावों सी,
कौन है जला एक दिया नयी राह दिखायेगा।
अब कौन आकर कांटों से निज़ात दिलायेगा

बबूल के पेड़ों से देख उलझी तमन्नाएँ,
फूलों की रखती थी चाह बेशुमार फिजायें,
जीवन मोड़ पर ऐसा बागबां कौन आयेगा।
अब कौन आकर कांटों से निज़ात दिलायेगा

मन को बासी फूलों सा फेंक दिया आज तोड़,
चूस-चूस चले गए भौरे सूखे डंठल छोड़,
इन डंठल को आ कौन फिर से कलम बनायेगा।
अब कौन आकर कांटों से निज़ात दिलायेगा

# वाह्य तिमिर दूर करूँ

वाह्य तिमिर दूर करूँ जीवन में यह चाह लिए
जग उजियारे को मैंने दीप कई जला दिए
कोई चाह नहीं हृदय बची बाकी उजालों की
परवाह नहीं मुझे यहाँ कोई जग वालों की
गोविन्द की शरण में आना है
अब तो अंतस दीप जलाना है

सागर तट बैठ बैठ गोते कई लगा चुका
गर्जित मेघ वर्षा में कई बार नहा चुका
किनारों को छोड़ भव ज्ञान की भी न कोई चाह
ज्ञान मेह में नहाने की दिखा बस मुझे राह
प्रीत सागर में डूब जाना है
अब तो अंतस दीप जलाना है

यह देह प्रकृति के त्रिगुणों से रचित भोग चुका
सांसारिक सुखों से दुखी इच्छा को रुका रुका
अब सप्त तापों से निस्तार की चाह लिए हूँ
मोह विषय भोग से उद्धार की चाह लिए हूँ
कितने पल अतिरिक्त गँवाना है
अब तो अंतस दीप जलाना है

'इंदु' अभिलाषा शीघ्र पूर्ण करें, अब तो आ जाओ गोविन्द हरे
चरण शरण में स्वामी लाना है, अब तो अंतस दीप जलाना है

# प्रीत की बांसुरी

प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी
आज मीरा वही गीत गाने लगी
प्रेम के साथ झूला झुलाने लगी
गोपियाँ श्याम को आ सुलाने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

साथ मेरे चला आस थोड़ी चढ़ा
बात दोनों कही बात ज्यादा बढ़ा
श्याम तेरी कहानी यहाँ आ मढ़ा
वो कन्हैया नचा प्रेम गाने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

साथ में रास कान्हा रचाता रहा
ज्ञान अध्यात्म कृष्णा पढ़ाता रहा
वेणु ऐसी बजाई नचाता रहा
गोपियाँ श्याम को ही नचाने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

राधिका का सखी चम्पई रंग है
बावरे कृष्ण का सांवरा अंग है
मोहता शीश पे मोर का पंख है
मोहनी खूशबू साथ आने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

सांवरे को सताया गया ठाँव में
आ नचाया गया धूप में छाँव में
छाछ के तो लिए डोलता गाँव में
घी दही के लिए वो डुलाने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

राधिका का सखा बावरा मोहना
और मीरा हुई भामिनी साजना
साथ दोनों कहे बात वो मान ना
प्रेम की स्नेह पाती तुलाने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

बात में साथ में गांव में छांव में
अर्कजा के किनारे नटी ठाँव में
डोलता घूमता सांवरा गांव में
वो सखी आ यहाँ झुंझलाने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

मोर पंखी सखी माथ पे सोहता
रूप तेरा नशीला कनू मोहता
प्रीत में जी में रीत में ठोहता
खूब वो श्याम को आ मनाने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

वो नहीं तो नहीं तू यही सत्य है
ज्ञान दे दे कहीं वो नहीं कृत्य है
रूप अध्यात्म है लोक ये मृत्य है
सार ये विश्व को आ बताने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

ब्रह्म है सांवरा बावरा जानती
गोपियों की कृपा ईष्ट है मानती
पूजना है घनश्याम को ठानती
श्याम के नाम से गीत गाने लगी
प्रीत की बांसुरी वो बजाने लगी

# चामरी में एक प्रार्थना

तपो धरा मिले मुझे जहाँ सदैव यज्ञ धर्म कर्म का विधान हो
न मोह हो सदैव तुष्टि पुष्टि धैर्य हर्ष का प्रभाव ज्ञान ध्यान हो
विशेष वेद की ऋचा पढ़ूं अशेष शेष ज्ञान योग गीत प्राप्त हो
पुराण में लिखा अधीर सा पढ़ूं अद्वैत तत्व सूक्त शास्त्र ज्ञात हो

**नवगीत :**

मैया आपके अनुष्ठान मंच पर
प्रति पादित मेरी आस्थाएं तत्पर
कर्मबोध मिला नहीं शांति क्षणों का
यह तो जीवन सेतु है अनुभवों का

तिरोहित-अभिलाषा, परिवर्तित-आशा, लाते शुभलक्ष्य है
जीवन परिचय तो संकेतात्मक बिंदु है बस प्राकट्य है

स्थावर प्रज्ञा निहित आत्म संशोधन
मात आशीर्वचन आधार प्रबोधन
उत्कृष्ट निष्कृष्ट पाप पुण्य संकलन
विचार ज्ञान का तेरे द्वार संरक्षण

परिचय क्या दूँ मैया परिचय मेरा यह नश्वर तन ही है
आत्मा परमात्मा एकाकार हैं अन्यथा भ्रम मन ही है

तेजोमयी यशोमयी चंचला सी
तृषित धरा सिंचित नीर श्रृंखला सी
रहती बन कर छत्र भाव सागर सी
तृष्णा पूर्ति को अपरिचित गागर सी

उद्वेलित चित्त को शांति दे अपरिचित प्रयास को दे भ्रान्ति
क्रोधित मन को क्षान्ति दे अपरिचित रोगी देह को दे कांति

मेरी अम्बे से नहीं कौन परिचित
न चाहिए मुझे कोई साथ लंबित
आत्म-संतुष्टि हो, अंतस हो शांति
हृदय प्रेम निवास हो मुख हो कातिक

सद्‌बुद्धि का प्रवेश हो, दंभ अनीति खल न हो 'इंदु' कतिपय
आनंद हो, उमंग हो, जीवन व विश्वास का हो समन्वय

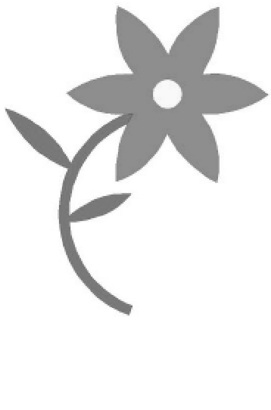

# माँ तुम आओ

माँ तुम आओ तोड़ो बाधाएं
साथ लाओ असीमित आशाएं
गांठे कितनी रह गयी बांधनी
कितनी गांठे रह गयी खोलनी

ढाक धुनुची धान जवा सजाकर
साथ आएंगी सुरभि कुसुमाकर
अपराजिता टूट गिरे धरा पर
तुम्हारे चरण छूने को तत्पर

सिंदूर आलता रूप सजा कर
तेजोमय श्रृंगार किया आकर
नीलोत्पल भी खिल उठे सरोवर
मैया तुम आना आशा लेकर

# तेजस रूप लिए माँ

तेजस रूप लिए माँ, द्वार मेरे आना
मैया तम अंतस का, सूरज बन मिटाना
तेजस..........

अंदर सरिता में जब, बाढ़ सी आती है
आशाओं का मर्दन, नित्य कर जाती है
ले वारि मेघ से तुम, छटा प्रिय बिखराना
तेजस..........

अन्तर्घट सूखा हो, हृदय पट भूखा हो
स्नेह रीत चुका हो, मनुज मन रूखा हो
घुमड़ घुमड़ नभघन से, प्रीत जल बरसाना
तेजस..........

सपनों के सागर में, भर कल्पना गागर
तुषार आच्छादित मन, खुशियाँ मधुर पाकर
झूम झूम नृत्य करे, प्रकृति पीयूष लाना
तेजस..........

सुख दुख लहरे आती, आती चली जाती
हेम राशि अम्बुधि तट, मधु छटा बिखराती
सस्मित आनन तेरा, लिए तू मुस्काना
तेजस..........

लिए प्रात की अरुणिमा, संचार हो उमंग
प्रद्युत अवनि आकाश, नूतन प्रकाश संग
जागृत करना अंतस, प्रीत गीत तराना
तेजस..........

मात 'इंदु' जीवन में, भरा तेज आपका
समाहित कर आलोक, तम लुप्त प्रलाप का
जीवन की बगिया को, सदा तू हर्षाना
तेजस..........

# लिख लिख पाती श्याम पिया को

लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले
बैरी ढीठ फिर भी न आये, कान्हा ब्रज के तुम ग्वाले
नैनन अश्रु बहे मन रोये, चित्त भाव विभोर हाले
ढूंढ ढूंढ ब्रज गलिन थकी मैं, मन मोहन मुरली वाले
लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले

मथुरा गये कृष्ण कन्हाई, छोड़ गोपियन सुख कारी
जाना था तो की क्यूँ लीला, क्यूँ मारी नैन कटारी
चुरा वस्त्र हमारे नदी तट, क्यूँ दिया ज्ञान बनवारी
याद आता माखन चुराना, छेड़ छाड़ बैठे ठाले
लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले

कुंज गलिन में जमना तीरे, बंशी की धुन मतवाली
तेरे सिर मोर मुकुट सोहे, मोहें लट घुंघर वाली
तिरछी नजर चाल नखराली, है सूरत काली काली
'इंदु' हृदय उलझ बसा मोहन, मेरे मन भरो उजाले
लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले

प्रेम की वेणु प्रेम की धेनु, प्रेम धाम सबसे न्यारा
वृंदावन प्रेम नगरी बनी, जब आया मोहन प्यारा
रूठ छोड़ चला प्रेम नगरी, गोपी नैनन का तारा
'इंदु' कहे आय श्याम प्यारे, बसों अंतस ओ निराले
लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले

# तन बिगाड़ा मन बिगाड़ा

तन बिगाड़ा मन बिगाड़ा रे
डूब डूब कर द्वेष गरल में
छोड़ अहंकार जी ले प्राणी
प्रेम प्रीत सा सहज सरल में

पी प्राणी कुम्भ राम रस का
अजी पी प्याला श्याम रस का
तूने मैली की माया मोह से चदरिया
आई क्यूँ जिंदगानी पर काली बदरिया
गुमान तू मत कर पांच तत्व के चोले पर
तेरे तन की इक दिन ढह जायेगी अटरिया

धन दौलत के पीछे भागा
पी हाला क्रोध काम रस का
पी प्राणी कुम्भ राम रस का
अजी पी प्याला श्याम रस का

माटी के पुतले माटी में मील जायेंगे
महल मालिया तेरे सब यहीं रह जायेंगे
सांस सांस बस काम क्रोध धरे रह जायेंगे
संभल जा प्यारे छोड़ सब प्रभु घर जायेंगे

कितनी कर ली कमाई 'इंदु'
अब पी हरी नाम रस का
पी प्राणी कुम्भ राम रस का
अजी पी प्याला श्याम रस का

# हे जगस्वामी

हे जगस्वामी हृदय पटल पर आ विराजो नित
यह मनःस्थली है तेरी, तुम्हीं करो इसे हर्षित

रहते सदा इन दृगों में तुम ही तो
रक्त कण में दौड़ते हो तुम ही तो

मेरी जीवन ज्योत को कर दो नाथ आलोकित

प्रभु भय नाश करो, रक्षा करो बुराईयों से
शक्ति दो भक्ति दो मन भर दो अच्छाईयों से

संघर्षरत रहूँ, चिंतन शील रहूँ
हार न मानूँ कभी विपत्तियों से

है अवसाद से घिरा तन, मन भय से आतंकित
मेरी जीवन ज्योत को कर दो नाथ आलोकित

प्रभु जब हूँ शरण तेरी, फिर चिंता क्यों दुखों की
मन चाहता तेरे मन बसूं नहीं चाह सुखों की

ले शरण, संभाल मुझे आकर नाथ
मुसीबतों में जी रहा, थाम ले हाथ

मैं पड़ा चरण शक्ति दे लड़ सकूं समर अघोषित
मेरी जीवन ज्योत को कर दो नाथ आलोकित

साहस दे, धैर्य दे, लड़ सकूँ मैं बाधाओं से
बल-बुद्धि-ज्ञान दे निकाल काली घटाओं से

प्रकृति से मनुज का शर संधान हुआ
त्रस्त आज जग में हर इंसान हुआ

नाथ तू अर्चित अधिष्ठित, तुझ पर जीवन अर्पित
मेरी जीवन ज्योत को कर दो नाथ आलोकित

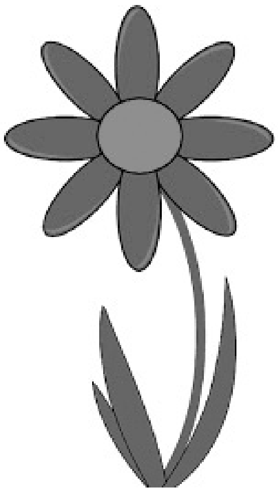

# जीवन के दिन बीत रहे

जीवन के दिन बीत रहे न जाने गया चैन कहाँ
फिर कब केसर-क्यारी महकेगी मन बेचैन यहाँ

क्यूँ अमावस रात घनघोर छा रही
क्यूँ तड़पन जगत की बढ़ती जा रही
क्यूँ चमन उजड़ा क्यूँ याद सता रही
क्यूँ वीरान देह अब हक जता रही

हर जन सोच रहा कब थमेंगे बरसते नैन यहाँ
जीवन के दिन बीत रहे न जाने गया चैन कहाँ

जीवन भर थी सबको तलाश उसकी
खामोशियाँ सदा रही पास उनकी
हर खुशनसीब लम्हों की आस सबको
आज विकट हुआ मिलना पास उनको

हृदय पीड़ा के दुर्मिल स्वर खोए दिन रैन यहाँ
जीवन के दिन बीत रहे न जाने गया चैन कहाँ

सूने हैं शहर वीरान गलियाँ हैं
आज दहसत में पूरी दुनिया है
देश द्वीप महाद्वीप सब मरघट हुए
बेबस मनुज नत हो अन्तर्घट हुए

अध्यात्म बोध हुआ अब ईश पूजन दिन-रैन यहाँ
जीवन के दिन बीत रहे न जाने गया चैन कहाँ

वेदना समर्पित ज्ञान मिला मुझको
हर याम कर्तव्य ध्यान मिला मुझको
भूलें की कितनी सीख मिली मुझको
छोड़ प्रकृति पीड़ा चीख मिली मुझको

जीवन के दिन बीत रहे न जाने गया चैन कहाँ
फिर कब केसर-क्यारी महकेगी मन बेचैन यहाँ

# देह नष्ट होती है

देह नष्ट होती है कर तू इससे न अनुराग
क्यूँ लिप्त तू मोह लोभ में, छोड़ वीतराग।

वीराना है अन्त काल, संदिग्ध है मार्ग
जन्म मरण की वेदना ज्यूँ डसे गरल नाग
उस पार पिया घर है बाबुल यहाँ इस पार
बदल दुकूल मिलने चली प्रेयसि बार बार।

छोड़ चला साथी बन्धु छुटे प्यार अनुराग
क्यूँ लिप्त तू मोह लोभ में, छोड़ वीतराग।

नभ के जलद नदी संग जलधि में हैं आते
ये उड़ पुनः जलद में परिवर्तित हो जाते
आत्मा जल कण सी परिवर्तित होती रहती
जड़ है आत्मा, क्यूँ मृत्यु से तुम घबराते।

मृत्यु ही परम सत्य मृत्यु जीवन अह्म भाग
क्यूँ लिप्त तू मोह लोभ में छोड़ वीतराग।

उड़ चली सोन चिरैया न जाने कौन देश
छोड़ गयी खाली पिंजरा रहा कुछ न शेष
माया है महा ठगनी रचे दिन रात द्वेष
'इंदु' कहे प्रभु आओ कृपा करो हरो क्लेश।

कर्म स्थल है जीवन, विश्व कर्म ही वैराग
क्यूँ लिप्त तू मोह लोभ में, छोड़ वीतराग।

# कैसे धीरज धरूँ मनवा

कैसे धीरज धरूँ मनवा, मन में पीर बड़ी है
प्रियतम दुलारे तेरे बिन जिया फांस गड़ी है।

ये दो नयन कब से तरस रहे तेरी आस में
ये पागल रह रह बरस रहे तेरी याद में।
ज्यों चकवा चकवी तड़पें एक दूजे के बिना
ज्यूँ चाँद चाँदनी अधूरे एक दूजे के बिना।
मैं भी तड़पत हूँ रसिया अब आँख खूब लड़ी है
प्रियतम दुलारे तेरे बिन जिया फांस गड़ी है।

अब शीघ्र आन मिलो सजना और न देर करो
न जाने कौन घड़ी प्रलय आ जाय अंधेर हरो।
क्या पता फिर अब तुमसे कब मिलना नसीब हो
इंतजार युगों-युगों तक हो, मौत भी करीब हो।
राह तकती यह प्रेयसी प्रिय अब जान अड़ी है
प्रियतम दुलारे तेरे बिन जिया फांस गड़ी है।

किस विधि रिझाऊँ ओ रसिया तुझे मैं ना जानू
किस विधि बुलाऊँ ओ छलिया तुझे मैं ना जानू।
अगर मेरी लेखनी में मीरा से गीत नहीं
मतलब कदापि नहीं की मुझे तुमसे प्रीत नहीं।
'इंदु' नयन कह रहे प्रिय आ असुवन की झड़ी है
प्रियतम दुलारे तेरे बिन जिया फांस गड़ी है।

# रीत जगत की न्यारी

खेल खेल में तन खोया रे, खेल खोई सारी जवानी
खेल खेल में धन भी डूबा, डूब गयी खेल जिंदगानी
जोड़ जाड़ बहुत धन कमाया, रे लूट गया पल में सारा
अच्छी खासी देह बनाई, रोग शोक जकड़ इसे मारा
खेल खेल कर थका बावरे, बुढ़ापे आई सब बीमारी
जीवन खेल समझ रक्खा तू, पाप कर्म कैसी लाचारी
'इंदु' खेल समाप्त हो जाए, तन से छूटे सांस तिहारी
रीत जगत की न्यारी! भैया रीत जगत की न्यारी!

ऊंची ऊंची बिल्डिंग तेरी, यहीं पड़ी रह जाए सारी
लूट खसौट मचाएंगे सब, छिनने को हो मारामारी
अंत समय बंधु बांधव छुटे, छूट जाय देह से सांस भी
लाकड़ सो हाड़ जले तेरो, घी सो जले तेरो मांस भी
तेरह दिन सुनो त्रिया रोये, दिन दो रोये तेरो भाई
साल भर क्रिया कर्म सुत करे, जीवन भर रोवे है माई
तेरे करम ही तेरे साथी, यही तेरे साथ जाएंगे
पीछे मूड़ न देखेंगे वे, जो छोड़ने तुझको आएंगे
फूंकने की जल्दी मचावे, 'इंदु' राखे न लाश तिहारी
रीत जगत की न्यारी! भैया रीत जगत की न्यारी!

# प्रभु विरह-गीत

टूट चक्षु से तेरे सपने जब
सूखे पत्तों से झड़ जाते हैं
मनोहारी रूप आपका नाथ
चीर अंतस घाव कर जाते हैं
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं

भानु की उष्णता को करने कम
जब मेघ-कण नभ बरस आते हैं
निष्ठुर घनघोर जलद जब आकर
छोड़ धरा मिलन को बढ़ जाते है
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं

दूर रूठे प्रियतम को याद कर
दृग मोती-जल नित्य बहाते हैं
नैना भी शुष्क हो जब अनिमेष
दर्शन को अतृप्त रह जाते हैं
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं

मिलन इंदु बनता जब शिखर बिंदु
विरह गीत स्वतः निकल जाते हैं
पूर्ण चन्द्र को निहार चकोर जब
शुक्तिका मध्य पिय गति पाते हैं
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं

गुंजित भ्रमर शतदल-रस पान को
कमल पंखुड़ि पर मचल आते हैं
जब सरोज निज बाहों में आ आ
मधुकर को कर बंद तड़पाते हैं
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं

अब तो मिल कर जा मेरे प्रियतम
शुष्क अधर दर्शन गीत गाते हैं
नाथ निकल आ बाहर पाषाणों से
इंदु हृदय भाव उभर आते हैं
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं॥

# निशा भी कुमुदिनि खिलाती है

स्वागत में जिसके हो प्रसन्न
निशा भी कुमुदिनि खिलाती है
जिसके अर्चन को रजनी भी
तारों के दीप जलाती है
उस रसिक बिहारी के दर्शन को मेरी अँखियाँ प्यासी हैं
नित नित गीत बनाता हूँ अलंकृत कविता अधूरी रह जाती है
निशा भी कुमुदिनि खिलाती है।

शरद निशा के पूर्ण चन्द्र में
मनहर जब वेणु बजाते हैं
रूप सलोना नयन कटीले
देख सब मन हार जाते हैं
धुन तेरी बंशी की कानों में सुर सुधा घोल जाती है
बावरी मगन हो हो ब्रज ग्वालन लोक लाज ठुकराती है
नित नित गीत बनाता हूँ अलंकृत कविता अधूरी रह जाती है
निशा भी कुमुदिनि खिलाती है।

अर्कजा तट भर घट ब्रज नार
तरु तमाल झांक कर खोजती
सुन तान सुरीली सुध खोई
दृष्टि घुमा विरत वे बोलती

आ जाओ मोहन प्यारे तुझ बिन नींद नहीं अब आती है
निशि सूनी दिन सूना सब सूना तेरी याद रुलाती है

निशा भी कुमुदिनि खिलाती है।

आ भी जाओ रसिया तुम बिन
जीवन सूना सूना सा है
नींद कहाँ चैन कहाँ अब तो
सब कुछ छीना छीना सा है

आकर चैन दिला जिनका पीताम्बर झीना झीना सा है
इंदु नैनन में बस श्याम मनोहर की छवि नजर आती है

निशा भी कुमुदिनि खिलाती है।

# कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी

कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी, मन की वीणा झंकृत हो जाये।
कुछ ऐसी धुन रचाओ बनवारी, मेरा हर गीत अलंकृत हो जाये॥

मन मंदिर में आ जाओ अब गिरधारी
सुनी अँखियाँ देख रही बाट तिहारी
तू है रसिया मैं तेरी प्रेम पुजारी
मोदित नयन बढ़ाएं तृष्णा हमारी।
कुछ ऐसा करतब दिखाओ मुरारी, हृदय वेदना परिष्कृत हो जाए।
कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी, मन की वीणा झंकृत हो जाये॥

पूर्ण चन्द्र जब अर्ध निशा में होता है
श्रीधाम जब निश्चिन्त होकर सोता है
तब रास रचाने आते हो तुम प्यारे
सर्वांग स्पंदित कर जाते हो तुम प्यारे।
कुछ ऐसा रास रचाओ श्यामबिहारी, यह तन तन तरंगित हो जाए।
कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी, मन की वीणा झंकृत हो जाये॥

दृग तेरे मुस्काते और कुंतल घने
दृढ़ मेरा निश्चय प्रेम सूत्र तू बंधे
चपला टंकित चांदनी लगी नभ चढ़ने
बाल गोविन्द खड़े यहाँ नवनीत सने।
कुछ ऐसा चमत्कार दिखाओ, इंदु मन भक्ति भाव से परिसृत हो जाये।
कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी, मन की वीणा झंकृत हो जाये॥

# मुरली की तान से झंकृत होना

मुरली की तान से झंकृत होना तुम क्या जानो
उन चपल दो नैनों में खोना तुम क्या जानो
पवित्र हुआ बृज धरा की धरती का यह कण-कण
उद्धव प्रीत की रीत होती है कितनी विलक्षण॥

क्या जानो सस्मित आनन् का यूँ मन मोहना
श्याम वर्ण पर पीताम्बरी का यूँ तन सोहना
रात रात रास रचाना भाता मुझे हर क्षण
उद्धव प्रीत की रीत होती है कितनी विलक्षण॥

माखन का चुराना और मटकी का यूँ फोड़ना
सरोज नयन से इन नयन मकरंद का जोड़ना
न मिला तू जीवन भर तो भी जी लेंगे कृपण
उद्धव प्रीत की रीत होती है कितनी विलक्षण॥

क्यूँ नेह लगाया उसने, क्यूँ दी ये वेदना
क्यूँ छल से मथुरा गए, क्यूँ हर ली ये चेतना
काले भ्रमर सा कभी इस सुमन कभी उस सुमन
उद्धव प्रीत की रीत होती है कितनी विलक्षण॥

# धूमिल से अरुणित अम्बर

धूमिल से अरुणित अम्बर पर, इक रेख चमकती भी होगी
निराशा के गहन सागर में, इक लहर लहरती भी होगी
नागफनी आँचल में चटकी, इक कली महकती भी होगी
आशा में ही जी रहा, दुविधा ने आय घेरा
आ भी जाओ श्याम अब, हो मिलन तेरा मेरा॥

इस मधुवन कुंजन में तेरी, वेणु स्वर मधुर तो होंगे ही
ब्रज गोपी संग नर्तन दृश्य, द्वार घर मधुर तो होंगे ही
राधा जी के श्रृंगार रूप, यह न्योछावर मधुर तो होंगे ही
श्री सौन्दर्य चासनि में, मैं आज डूबा तैरा
आ भी जाओ श्याम अब, हो मिलन तेरा मेरा॥

नैराश्य बादल मंडराएं, तब आशा भी लहराती है
बाद हर अंधियारी रात के, एक नूतन सुबह आती है
जब इंदु हृदय घबड़ाता है, खूब तेरी याद सताती है
आशा लगा बैठा हूँ, कैसा होगा सबेरा
आ भी जाओ श्याम अब हो मिलन तेरा मेरा॥

# मधुर वेणु धुन नर्तन

जब अर्ध निशा का चन्द्र निहारिका प्रभासित करता है
जब प्रेम विह्वल प्रेमी चकोर सा शशि संग विचरता है
जब उठती गिरती साँसें प्रीतम पाने को तड़पाती हैं
तब मधुर वेणु धुन नर्तन कर देह मंडित कर जाती है।

मध्य शरद की रात्रि में, जब उठ पक्षी चहचहाते हैं
मधुप गुंजन कर मधुपान को पुष्प पर मंडराते हैं
मन की कलि खिल सी जाती है और नयन मुस्काते हैं
तब तेरी मुरली के स्वर हृदय आलोड़ित कर जाते हैं।

जब नयन मिले, नयनों ने कहा, मद भरे तेरे नयना
भाव मिले, भावना जगी, भव पार करे तेरी भावना
मधुबन में रास रचाया है, मिलन की है प्रभूत कामना
हे वृष्णि धूर्य मनमोहन, तब आकर और मन मोह ना।

हम ब्रज ललनाएं, प्रेम का निराकार रूप तुम हे स्वामी
हम ग्वालिन न जानें चित की सूक्ष्म गति हे अन्तर्यामी
हम प्रेम पुजारिन हैं, प्रिय तू शाश्वत ब्रह्म, हे नमामि
इंदु शीश नमन, देख छटा प्रीतम-पिया की, हे जगस्वामी ॥

# चाह कर भी न भूल पाऊँ

चाह कर भी न भूल पाऊँ, तेरी याद में बार बार खो जाऊँ।
यह जग मिथ्या न तेरा है न मेरा, किस विध तुझे याद कर पाऊँ।

धवलचन्द्र की चंचल किरणें जब जमना जल पर नर्तन करती है
खिली कुमुदिनी शशिप्रभा में मधुकर संग प्रीत गुंजन करती है
कदम्ब डाल डाल जब हो मगन झूम झूम नृत्य साधन करती है
कालिंदी तट रसीले होठों पर मदिर मुरली वादन करती है।

तेरा ही स्मरण मुझे विचलित करता है तुझे कैसे भूल जाऊँ।
यह जग मिथ्या न तेरा है न मेरा, किस विध तुझे याद कर पाऊँ।

यह ब्रज भूमि, रहस्यवाद की कर्मभूमि, उलझा जीवन रहस्य में
मोह माया की दास देह, कान्हा ने बतलाया इस भव-दृश्य में
श्याम मिलेंगे ध्यान उपासना नाम-संकीर्तन के सामंजस्य में
बनूँ मैं तेरा, तू हो मेरा प्रीत धन्य तेरी मेरी हो शस्य में।

इस बांसुरी के अभिमाद भरे निनाद में सुध-बुध खो सो जाऊँ।
यह जग मिथ्या न तेरा है न मेरा, किस विध तुझे याद कर पाऊँ।

पूर्ण शरद रात हो या हो जमुना की बात तुम खूब याद आये
ब्रह्म रज ब्रज है इस रज को मल मस्तक पर मन धन्यवाद गाये
इतनी न करो मेरे प्रभु प्रीत की हृदय झूम बावरा हो जाये
इंदु नैनन नीर बरसे, दर्शन को मन तरसे, मनवा है घबराए।

प्रीत के रहस्य को, उधो से भृतस्य को, मौन ज्ञान कैसे गाऊँ।
यह जग मिथ्या न तेरा है न मेरा, किस विध तुझे याद कर पाऊँ।

# काशीवासी कैलासी की प्रार्थना

वाराणसी सृष्टि की प्राचीनतम नगरी है जो कि मान्यतानुसार शिव जी के त्रिशूल के नोक पर बसी है। ऐसे में काशीपति के अस्तित्व को पूछा गया तो भोले बाबा ने स्वयं अस्तित्व बता दिया। आइये हम विश्वनाथ महादेव का वन्दन करें।

दोहा :

द्विरद अलंकृत चर्म पट, नीलकण्ठ त्रिपुरारि
गिरि रुप्याभ वर्ण ऋतु, अभ्यंकर कामारि

जटा मध्य गंग तरंग कलोल गल भुजंग शोभित हर हर हरे
उमा विभूषित वामांग मदन मद भंजक हरि प्रिय नेह भरे
बाघम्बर द्युपति भूपति गिरिजापति रौप्याभ रूपमन भज रे
काशी वासी अविनासी विश्वनाथ शम्भु चमत्कार करे

शिवं वाचामगोचर अनेकगुणाधीश अनेक रूपम हरि
ब्रह्मा विष्णुसुर सेवित पादपंकज विग्रह श्रीधरणिपति धरि
मृदंग डमरू नाद प्रभास उत्कर्ष मदिर स्वर पंचम भरे
काशी वासी अविनासी विश्वनाथ शम्भु चमत्कार करे

भुजंग भूषण भूषित भूताधिपति भवनाथ भयंकरि भारि
व्याघ्र जिनाम्बर धर जटिल त्रिनेत्र शूल पाश वर मुद्रा धारि
जटाधारी दक्ष यज्ञ विध्वंसक शुभ फल दाता कष्ट हरे
काशी वासी अविनासी विश्वनाथ शम्भु चमत्कार करे

शीतांशु शोभित किरीट बन जिनके त्रिनेत्र भस्म मद करते
भूलोक देवलोक पाताल लोक सब लोक स्वतः प्रकटते
समस्त भूताधि गणों के अधिष्ठाता आप क्यों न कृपा धरे
काशीवासी अविनासी विश्वनाथ शम्भु चमत्कार करे

आनन्दकन्द अपराजित अतुलनीय अवर्चनीय अवधूत
तेजस चेतस गुणाधीश निर्गुण निराकार शंकर अच्युत
राग दोष रहित भक्त वत्सल कृपालु वैरागी धीर भरे
काशीवासी अविनासी विश्वनाथ शम्भु चमत्कार करे

चिदाकाश ब्रह्म निरूपित नीलकण्ठ चित्त समाधि में लगा
डमडम डमरू नाद सुना दृष्टा विश्वनाथ अस्तित्व दिखा
सृष्टि से पूर्व सृष्टि के बाद तेरा ही तांडव नृत्य बिखरे
काशीवासी अविनासी विश्वनाथ शम्भु चमत्कार करे

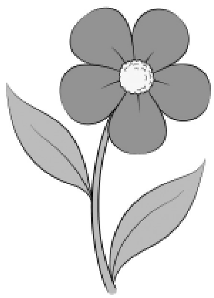

# ऐ मेरे प्यारे गणतंत्र

ऐ मेरे प्यारे गणतंत्र, ऐ मेरे पावन संविधान
विश्व में मेरा स्वाभिमान, तू अद्भुत एक कीर्तिमान
विभिन्नता में एकता को, समेटे सौहार्द्र प्रतीक तू
है जन जन भावनाओं का, उत्तराधिकारी सटीक तू

शत शत कोटि जन का तू है देवेश
नमन अभिनन्दन मेरे भारत देश

सींच इसे आर्य संस्कृति से, दे लहू किया संचारित है
सर्व धर्म समभाव सूत्र है, विश्व प्रेम जग प्रसारित है
बैठ वट वृक्ष की न छाँव में, उन्नत होगा भारत भाल
सब जाने कर्तव्य अपना, जाने निज अधिकार विशाल

गणतंत्र रक्षा को उठे सर अशेष
नमन अभिनन्दन मेरे भारत देश

सुरभित पुष्प से विराट, यह चमन हम महकायेंगे
विश्व प्यारा इसे गणतंत्र, हम सर्वोत्तम बनायेंगे
भारत का हर गाँव समृद्ध, और हर कृषक हो खुशहाल
विश्व गुरु हों पुनः विश्व में, चमके भारत माँ का भाल

भारतीय संविधान रहेगा विशेष
नमन अभिनन्दन मेरे भारत देश

# वीरों की धरा मेरा राजस्थान

दृढ़ कर चलो मन के अरमान
ऊँचा रखो सदा स्वाभिमान
याद कर वह आन बान शान
वीरों की धरा राजस्थान

अस्सी घाव लगे थे तन में, नव उमंग थी फिर भी मन में
अपनी अस्मिता बचाने को मर मिटने की ठानी रण में

बप्पा रावल की परंपरा
अमर वीरों की है यह धरा
अरि लक्ष्य का करते संधान
वीरों की धरा राजस्थान

महा राणाप्रताप का शस्य शोणित उष्नित हो खौला था
मेवाड़ का बच्चा बच्चा जय एकलिंग जी की बोला था

मुख मुस्कान धर करे साका
जौहर की जले अग्नि शलाखा
पन्नाधाय के सुत का बलिदान
वीरों की धरा राजस्थान

शिराओं में शोणित मेवाड़ माटी का था कुछ और नहीं
गौरव गाथा है हल्दी वाली घाटी की कुछ और नहीं

मुगलों की दासता ठुकराई
वन में रोटी घास की खाई
लौह पुरुष सहे ना अपमान
वीरों की धरा राजस्थान

श्रीराम के अन्जनियों जागो, कृष्ण के धनञ्जयों जागो
भारत के आर्य पुत्रो जागो, हे नर केहरियों तुम जागो

लगा माथ रज इस माटी की
शपथ रक्त रंजित घाटी की
अंगारों मध्य जीवन दान
वीरों की धरा राजस्थान

# चल रही अनल प्रचंड

2011 में आज के दिन यह कविता लिखी थी, तब उस समय जंतर-मंतर पर लोकपाल के लिए अन्ना का आंदोलन शिखर पर था। गीत लोगों को बहुत पसंद आया था और यह मेरे प्रारम्भिक गीतों में से था, क्योंकि 2011 से ही लिखना शुरू किया था। आज क्या परिस्थितियाँ बदली, हमें स्वयं सोचना होगा। नाम बदल गए, मुद्दे बदल गए, उद्देश्य बदल गए। आंदोलन का तरीका भी अब हिंसक हो चला है।

चल रही अनल प्रचंड,
दहक अन्ना रहे सदृश मार्तंड,
डर रहे सत्ता के उद्दंड,
इन्हें भस्मित करते चलो!

कृपा करे वक्रतुंड,
संचित नर झुण्ड
कोटि कोटि मुंड ही मुंड,
वेग विशाल लिए चलो, लिए चलो!

घबरा न भ्रष्टाचारों से,
सत्ता के गलियारों से,
रानी के चाटुकारों से,
जन-लोकपाल का ध्वज फहराते चलो!

# दिग्भ्रमित देश की व्यथा-कथा

दिग्भ्रमित देश की व्यथा-कथा, यथा सुनाने आया हूँ
तिमिर दूर करने ज्योति-कलश, आज सजाने लाया हूँ

देख देश यह गीता का है, कर्म का होता प्रसार
क्यूँ पोषित है आरक्षण के स्कंध पर होकर सवार
उठा शान से मस्तक जी ले, पी स्वाभिमान मकरंद
अगर नन्द नंदन बन न सको, तुम बनो विवेकानंद।

गिरे हुए आत्म सम्मान को, आज उठाने आया हूँ
तिमिर दूर करने ज्योति-कलश, आज सजाने लाया हूँ

देख हिंदुस्तान ढूंढ़ रहा, खोजे मेवाड़ी शान
बलिदान गुरू के बेटों का, राजपूती आन बान
तलवार सतावन सन वाली, भगत सिंह सा सरदार
ज्वार पद्मनी के जोहर की, शेर शिवा की हुंकार

आज तुम्हें पुरखों की भूली, कथा बताने आया हूँ
तिमिर दूर करने ज्योति-कलश, आज सजाने लाया हूँ

सीमा पर प्राण शहीदों के छूटते देखा बेजार
केशर घाटी है आतंकी से घायल बारम्बार
क्या क्या सुनाऊं कैसे कहूँ, लिखूं क्या क्या मनोद्गार
छोटी सी मेरी कलम बनी, घाव नाजुक हैं हज़ार

बलिदानी शहीद की स्मृति में, दीप जलाने आया हूँ
तिमिर दूर करने ज्योति-कलश, आज सजाने लाया हूँ

शिराओं में शोणित जिसके बहता था महाराणा के अरमान का
जिसकी एक बोली से ही चूर होता था अरिदल दम्भमान का
उसके सिंहनाद से फटता था कलेजा चीन पाकिस्तान का
छप्पन इंच छाती लिए नायक युद्ध कौशल के अद्भुत ज्ञान का

जो शीश कभी न झुका राजनीति में उस शीश को नमन करूँ
जो जीवन बिता दहके अंगारों में उस जीवन का वन्दन करूँ
आर्यावृत की सच्ची परम्परा के साधक का अभिनन्दन करूँ
देवभूमि के प्रलयंकर तू अभयंकर पुष्प अर्चन अर्पण करूँ

भारत के सपूत तुझे अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

# गोधूलि बेला

गोधूलि बेला है लौटती गायें हैं, मलिन है आकाश
कैसे स्वच्छ करूँ तम युक्त मन गगन, कैसे ढूंढू प्रकाश
कबीर की उलटबांसी बता, कितने दिन बचे मेरे पास
ब्रह्म निरूपित कर जिजीविषा में, खोज तत्वमसि चिदाकाश

बीच भँवर फँसी नैया टूट रही पतवार
ढलती जाए उमरिया जाना है उस पार

ये वय सन्धि व्योम के उड़ते विहग सम, कोई तो लो थाम
क्षण क्षण बंट टुकड़ों में जीवन, हर वर्ष चूक रहा मुकाम
ऊपर नीचे हिंडोल सा फिरूँ, पाया न लक्षित अंजाम
जीवन संध्या आई ले दिवस अवसान, करना है विश्राम

मित्र सखा बन्धु बांधव कह रहे बार बार
ढलती जाए उमरिया जाना है उस पार

मध्यम मध्यम काली घटा ने छा डाले हैं घन घनेरे
कभी न सोची उस पार की प्रभु, क्या आएंगे पल सुनहरे
कर्म किये नेक ही हैं, नेक ही रहे सदा विचार मेरे
नई सुबह होगी कल, नव दिनकर आएगा सुबह सबेरे

मनःस्थली स्थिर कर करता मैं चिंतन विचार
ढलती जाए उमरिया जाना है उस पार

कभी विरह गीत उद्घोषित तो, कभी है तृषित नयन प्यास
पर्वत डगरिया सा जीवन पथ, लेता छोड़ता उच्छ्वास
उतरता चढ़ता दुर्गम मार्ग पर और किया अंतिम प्रयास
उन्मुक्त उर आ सींच, जीवन साथी देती मधुर अहसास

जीवन अवलम्बन बिखरा हुआ शाखाचार
ढलती जाए उमरिया जाना है उस पार

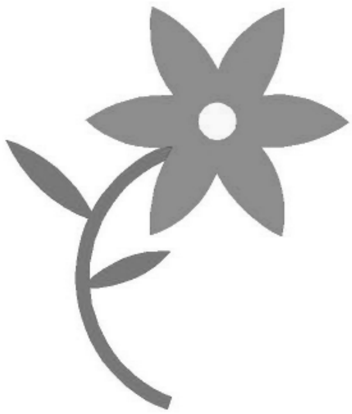

# लो जीवन का

लो जीवन का एक वर्ष और बीता
क्या भरती था क्या रह गया है रीता
लो जीवन....

आशाएं द्रवित हुई, नयन हैं भारी
कितनी पीड़ा कितने अश्रु सब चिंगारी
बचा कुछ नहीं रीती अपेक्षाएं सारी
इस जीवन समरांगन में कौन जीता
लो जीवन....

नगपति सा दृढ़, संकल्प वसुधा में सींचा
व्रीडित हुए देख जग रीति मन खींचा
कभी क्रोधित हुई धरा कब तन भींचा
भूले निर्भया का बलिदान सूनी है सीता
लो जीवन....

छल प्रपंच भ्रष्टाचार पूरित रहा साल
आतंक अनाचार बमों से डरा साल
नियति अनियति के दुष्प्रभाव से भरा साल
नूतन वर्ष पावन है जैसे गीता
लो जीवन....

# जी लिया हूँ खूब जी भर कर

जी लिया हूँ खूब जी भर कर, अब न कोई आस बाकी है
पी लिया हूँ खूब छक छक कर, अब न कोई प्यास बाकी है

जीवन सुधा रस चखा डूबा, चख चख कर और छका मैं तो
पाखी सा बन गगन पर उड़ा, उड़ उड़ कर और थका मैं तो
जी भर जिया हूं जी भर मरूं, अब न कोई ख्वाब बाकी है
जी लिया......

ये रहा, वो रहा, नहीं रहा, सब छूटा चल दिए हम कहाँ
न तू साथ था, न वो साथ थी, मेरा पीछे छूट चला जहां
न सुबह बाकी, न शाम बाकी, अब न कोई रात बाकी है
जी लिया......

चाह नहीं अब परवाह नहीं, बस निकलती आह बाकी है
समंदर नहीं, किनारा नहीं, गहन अंतरदाह बाकी है
निराशा नहीं, प्रत्याशा नहीं, अब न कोई त्रास बाकी है
जी लिया......

देह का क्या रह जाए यहीं, मन तो हो उन्मुक्त डोलता
चीर अंध तमस विचारों का, जल तरंग सा चित्त बोलता
साध ले चंचल अश्व मन को, अब न कोई सांस बाकी है
जी लिया......

# दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता

कुछ भरा सा कुछ रहा रीता रीता
आशाएं हारी असंतोष जीता
अंतस उद्विग्न था ठोर थी गीता
दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता।

नोटबंदी जीएसटी का कहर था
या यह विशुद्ध राजनैतिक पहर था
मुद्दा बना बना कौन हार पीता
दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता।

रणभेरी चुनावों की गूंजी यहाँ
भाषा की परिधियां भी टूटी यहाँ
संवाद रहा कुछ फीका कुछ तीता
दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता।

दुश्मन के घर जाकर आतंक मारा
विश्व विश्व प्रतिष्ठा उजागर तारा
राम रहीम के घर कैद थी सीता
दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता।

बाबाओं के घर में छापा डाला
कालेधन पर अंकुश लगा उछाला
देखो ज्ञान की उल्टी बही सरिता
दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता।

कोई था भक्त तो कोई अछूता
कोई त्रष्णु कोई अग्नि भभूता
समरसता में लगा देशज पलीता
दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता।

नाथ मेरे नया वर्ष मनोरम हो
सर्वहित सर्व-प्रिय वर्णानुक्रम हो
लोग कहें भारत ने जग को जीता
दो हज़ार सत्रह का वर्ष बीता।

# मातृभूमि

द्युलोक की प्रत्युष कांति या विभावरी का मणि वलय
झंकृत करती अत्युक्त वीणा या हँसध्वनि की लय
सद्य शांत सित सलिला श्रावण की मेघ माला शुद्ध
मानस मन्दिर की प्रदीप्त ज्योत ऋचाओं सी प्रबुद्ध

पावस बोध सघन, मेघ दृश्य घन, गगन संवारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥1 ॥

मन भावन हरित अवनी और नील गगन
सोहे भाल भानु शशि इसके सज पावन
निर्मल सरिता जल करता कलकल वंदन
सुरभित मण्डित प्रसून आच्छादित उपवन

शरद रजनीश प्रभा यहाँ छिटक अमिय नजर उतारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥2 ॥

विमल गंग धार लिए अमिय रस बहे यहाँ
शीतल पवन झकोरे मोदित करे यहाँ
सौष्ठव भरती षट ऋतु उमंग आनन्दित
देश उत्सवों का मेरा करे प्रफुल्लित

मदिर ऋतुराज बसंत भर नव उमंग जहाँ डालती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।3 ।।

चन्द्र किरण जहाँ सुधा शुचि रस बरसाती
उच्च गिरि शिखर कलकल सरिता हरषाती
प्राची से अरुणिमा लिए भानु अमृत दे
गोधूलि धूल उड़ स्वेद ठहर तृप्त करे

मैया तेरे पग जलधि उर्मियाँ धो धो पखारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।4 ।।

शिव डमरू से सप्त सुरों का नाद प्रथम
हिम गिरी कंदराओं से आल्हाद प्रथम
पक्षी चहक चहक लाते सबेरा यहां
रुनझुन स्वर नाद मोहे मन मेरा यहां

नित प्राची से उठ भास्कर रश्मियां भाल सँवारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।5 ।।

महि धर अखंड मैत्रयी भाव सुहाती
नव गीत नव रीत नव मीत नित बनाती
आर्य भूमि यहां देव रमण को हैं आते
साधु संत ऋषि गुणी धीर वचन सुनाते

चारु सम्पदा मनोहर पर्वत वन उपवन धारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।6 ।।

यह उत्तम त्योहारों का देश निराला
ओम नाद से गूंजता मन्दिर शिवाला
पत्थर भी पूजे जाते आर्य धरा पर
अतिथि देव हैं भारतीय परम्परा पर

परंपराओं की संस्कृति त्रिलोक बस प्रीत तारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।7 ।।

जननी जन्म भूमि स्वर्ग से बढ़ कर तुम हो
हे मातृभूमि यश आत्म बल प्रखर तुम हो
रज का कण कण चंदन शीश लगाता हूँ
अनुपम पावन दृश्य देख इतराता हूँ

संस्कृति की उन्नायक जगति मलयज जय जय भारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।8 ।।

माँ मेरी धरा जननि जन्म दायिनी तू
माँ क्षमामयी दयामयी सुहासिनी तू
पृथा अनमोल सुधामयी वात्सल्यमयी
तू विभव शालिनी क्षेममयी प्रेममयी

सृष्टि सुदृश्या मनोरम चित्र सहज जय जय भारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥9 ॥

हे माँ तू सुजला सुफला शस्य श्यामला
उपवन कुसुमित पल्लव हरित नीरांजला
संस्कृति की प्रथम प्रचारक देव उपासक
जगत जननि दुर्गेश नन्दिनी जग व्यापक

महिष मर्दिनी की धरा रम्य अरि दमन कर डालती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥10 ॥

बहे मंदाकिनी कलकल कीर्ति रंजना
जगत वंदनी धरिणि धरा परिकल्पना
भूमि तिमिर हरण की भूमि ज्योति वरण की
जननि धरा यह वीर पुत्र जनम तरण की

धरिणि धरण शरण चरण रसीले निर्भय जय भारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥11 ॥

वीणा झंकृत कर बजे वागीश्वरी की
सप्तसुरों की जननि मात सुरेश्वरी की
लोहित व्योम पर रोहित दृश्य मन मोहे
श्रृंगों पर मल्हार धुन की घुंघरू सोहे

लोहित रोहित मोहित दर्शन अम्बर करे आरती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।12 ।।

भीमसेन जसराज लता मुकेश किशोर
नौशाद का संगीत रफी करे विभोर
जनजन के हृदय में अमर गूंज संगीत
नीरज प्रदीप भरत व्यास के सृजन गीत

सुर गीत सज राग रागिनी नित नव राग अलापती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।13 ।।

रचें ग्रन्थ पावन ऋषि मुनि वेद व्यास से
वाल्मीकि भारद्वाज वशिष्ठ कालिदास से
ज्ञान विज्ञान पूरित ऋषि प्रज्ञ हमारे
विश्व गुरु बनाएं अध्यात्म दर्शन न्यारे

विश्व गुरु प्रगल्भ ज्ञान ज्योत जगा अंध को हारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।14 ।।

होता है पढ़ पढ़ मन स्पंदित आज भी
अद्भुत चौसठ विधाओं का अंदाज भी
दूरी बताई सूर्य शशि विभावरी की
ज्योतिष गणना, स्वर वन्दन असावरी की

आर्य भट्ट वराह मिहिर से विज्ञ इस धरा वासती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥15 ॥

वह माटी चंदन सम शीश लगाता हूँ
लहू सींच माटी का कर्ज चुकाता हूँ
मातृभूमि यश है उत्कर्ष है हर्ष है
अरि शीश शोणित रंजित काट अमहर्ष है

शोणित प्रवाह रक्षक वीर समर भूमि में राजती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥16 ॥

श्रीराम, सव्यसाची पार्थ से धनुर्धर
आंजनेय और भीम से हुए वीरवर
सत्य प्रतीक हरिश्चन्द्र पूर्वज हमारे
भीष्म प्रतिज्ञा करें हैं अग्रज हमारे

गौरव गाथा की पृथा जिनकी आरती उतारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥17 ॥

गार्गी मैत्रिय भारती सी विदुषी यहाँ
लक्ष्मी बाई, दुर्गावति सी वीरांगना
जोहर अनल में आहूत हों दे बलिदान
पृथा सी धीर नारी भारत की महान

जौहर ज्वाला से आत्म चमत्कृत कर पग पखारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥18 ॥

रक्ताभ व्योम से शोणित धार बहा दे
शिवा से वीर मुगलों का दम्भ ढहा दे
राणा का शौर्य इंच छप्पन की छाती
वीरों को है चेतक की चाल गर्वाती

हर शूरवीर योद्धा अलबेले निर्भय जय भारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥19 ॥

बिस्मिल भगत आज़ाद अशाफाकुल्लाह
सुभाष सावरकर लाल बाल पाल वाह
नेहरू गांधी पटेल शास्त्री अटल से
क्रांतिकारी नेता हैं जिस भूमिस्थल पे

सस्मित आनन चढ़ गए फांसी कह जय जय भारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥20 ॥

हिम तरङ्ग सित मेघमाला शीश धरते
तुलसी मीरा सुर जायसी गीत रचते
वैभव भूमि अमिय रस सलिल अभिभूत की
देवऋषि ब्रह्म ऋषि ज्ञान ऋषि प्रज्ञ सुत की

ऋषि मुनि संत साधु ब्रह्म की मेधा भाल सँवारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥21 ॥

हर पुरुष उतमौजा नारी शिखरिणि सी
बिखरी छटा गिरी पर्वत निर्झरिणी सी
व्योम अभ्र आच्छादित रोहित दर्शाए
गुंजन भ्रमर मकरंद स्पंदन को आये

भ्रमर गीत या वेणु गीत सद्य जीवन संवारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥22 ॥

इतिहास हमारा मस्तक करता गर्वित
शोणित सुन गाथायें होता उद्वेलित
चाणक्य देते राजनीति पर उपदेश
आदिशंकर का पढ़ पढ़ अद्वैत संदेश

चिंतक सब मातृभूमि के उतारें तेरी आरती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥23 ॥

बुद्ध का तेज फैलाये कीर्ति महान
निर्वाण अष्टांगिक का दे हमें ज्ञान
नौवां अवतार हमारे बुद्ध भगवान
बहुजन हिताय भारत का बुद्ध अभिमान

शान्ति कांति ले बुद्धम शरणम जा जीवन संवारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।24 ।।

प्रेम संदेश देता धर्म प्राचीनतम
अहिंसा शुचिता मूल सिद्धांत उत्तम
ऋषभ देव से महावीर का ले आदेश
भारत की शान हैं सब अनुयायी विशेष

जीव अजीव आस्त्रव निर्जरा मोक्ष अस्तेय धारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।25 ।।

अवत्सरा वृहस्पति अत्री लोपामुद्रा
अगस्त्य भारद्वाज वशिष्ट व्यास आद्रा
शाकल्य वाल्मीकि गार्गी मैत्रयी अरुणि
घोषा याज्ञवल्क्य शांडिल्य ऋषि पाणिनि

विचारक संत ऋषियों की शिक्षा भव सिंधु तारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।26 ।।

जाबाल शुक्राचार्य पार्श्वनाथ पिप्लाद
सुश्रुत अष्टावक्र श्वेतकेतु प्रह्लाद
गुरु चावार्क मक्खाली महावीर बुद्ध
निज सिद्धांत से करे हमें ज्ञान प्रबुद्ध

पिंगला जैमिनी पतंजलि बादरायण ज्ञान मति
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।27 ।।

चन्द्रगुप्त अशोक समुद्रगुप्त विक्रम से
पुष्यमित्र शुंग पांड्यन के पराक्रम से
विश्वविजेता चोल सातवाहन की गाथा
पोरस का पुरुषार्थ धर्म का अधिष्ठाता

कनिष्क भारशिव नागवंश की गाथाएं पुकारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।28 ।।

पन्द्रह शतक से निरन्तर चितौड़ शासन
इकलौता विश्व में एक वंश का शासन
अहोम राज्य कभी न हुआ गुलाम कहते
इस इतिहास को स्मरण कर गर्वित रहते

मराठाओं की बात अजब गर्व से लहू संचारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।29 ।।

मगध वल्लभी चाल्लुक्य मेवाड़ी शान
गुर्जर प्रतिहार ललितादित्य की आन
शूर अद्भुत दाहिर  पृथ्वीराज चौहान
तोमर परमार सोलंकी रहे  पहचान

कश्मीर लोहार, बंगाल के सेन की करूँ आरती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥30 ॥

सिंधु घाटी की सभ्यता पंच सरित देश
देख गोविंद सिंह का पराक्रम विशेष
हर पल सहाय नानक देव का उपदेश
सप्त सिंधु वैदिक उत्थान के परिवेश

रणजीत सिंह जी की तलवार अरि को संहारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥31 ॥

रानी अहिल्या बाई का नव निर्माण
जिनके बसते मातृ उत्कर्ष मध्य प्राण
मराठा मातृशक्ति उन्नति वहाँ महान
शिव भक्त शिव मंदिरों का किया उत्थान

जय जय आर्य नारियाँ दुनिया दिव्य शक्ति निहारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ॥32 ॥

पावन ऋचाओं की ध्वनि झनकार तुम हो
बजती मन्दिर घंटी की टंकार तुम हो
हृदय निकुंजों में भँवर गुंजार तुम हो
फूलों की खुशबू, जीवन पुकार तुम हो

वेद ऋचा या मानस की चौपाई मन उतारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।33 ।।

वेद उपनिषद गीता स्वछंद छंद कहें
सकल मनस सलिला प्रीत मित्रवन्द कहें
जननि शांति प्रतीक व्युष्टि परिचायक नमन
मातृभूमि परमानन्द सुखदायक नमन

करूँ मातृभूमि सुखदायक गर्व प्रदायक आरती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।34 ।।

प्रीत है मातृभूमि से प्रीत बहे यहाँ
हर कोई प्रेम प्रीत के गीत कहे यहाँ
गीता कृष्ण की ओम नाद गूंजे यहाँ
वेद उपनिषद आत्मा बसे पूजे यहाँ

विश्वानर का ब्रह्म नाद चित्त नित ओम उचारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।35 ।।

नमन मातृभूमि मेरा संसार तुम हो
अंतस धड़कनों की अद्भुत सार तुम हो
तन मन नयन बसाया ज्योति भास तुम हो
मेरे छंद सृजन किसलय मधुमास तुम हो

जीवन दंड विधान तुम आन बान शान पुकारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।36 ।।

हे मातृभूमि हम गर्वान्वित हैं तुझ पर
तुम्हारा उपकार कम क्या होगा मुझ पर
खेले तुम्हारी गोद में हो मुदित मगन
हर्षित हुए हम निरख प्राकृत छटा सघन

आँचल तेरा ओढ मृत्यु साधक खेलते भारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।37 ।।

अतीत की धरोहर कल्पना का भारत
गीता ज्ञान पराभव दर्शाता भारत
नौनिहालों का प्रगति-पथ लाता भारत
युवाओं का दिवास्वप्न बताता भारत

भारत गौरव गान सर्वत्र मातृभूमि पखारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।38 ।।

ये भारत है भविष्य दृष्टा मार्ग दर्शक
कर्ण धारकों की आकांक्षा आकर्षक
वसुधैव कुटुम्बकम् का प्रसारक भारत
दिशा निर्देशक विश्व शान्ति प्रचारक भारत

निष्पति प्रेरणा की चिदाकाश ब्रह्म निष्ठ धारती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।39 ।।

अनंत आराधना निरूपित जगत माते
भाल हेम किरीट हिम शोभित प्रनत माते
लक्षित व्योम होम रक्षित मस्तक नत माते
रुधिर की प्रत्येक बून्द समर्पण हत माते

व्यूष की अरुण द्युति सरोरुह सम उज्ज्वला बघराती
भाल सजी मातृभूमि की पवित रज जय जय भारती ।।40 ।।